अप्रैल 2013

दादावाणी

मूल्य : ₹ १०

आरती नित्य उतारे हे प्रभु ! खोलना मोक्ष का द्वार,
स्वामी दर्शन से पाएँगे मोक्ष रे, दादा करना अनुसंधान ।

संपादक : डिम्पल महेता
वर्ष : ८, अंक : ६
अखंड क्रमांक : ९०
अप्रैल २०१३

संपर्क सूत्र :
त्रिमंदिर, सीमंधर सीटी,
अहमदावाद-कलोल हाइ-वे,
पो.ओ.: **अडालज**,
जि.: गांधीनगर-382421.
फोन : (079) 39830100
e-mail :
dadavani@dadabhagwan.org
www.dadabhagwan.org

Printed & Published by
Dimple Mehta on behalf of
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj - 382421. Dist-Gandhinagar.

Owned by
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj - 382421. Dist-Gandhinagar.

Printed at
Amba Offset
Basement, Parshvanath Chambers, Nr.RBI, Usmanpura, Ahmedabad-14.

Published at
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj - 382421. Dist-Gandhinagar.

Total 32 pages including cover

सबस्क्रिप्शन (सदस्यता शुल्क)

१५ साल

भारत : ७५० रुपये
यु.एस.ए. : १५० डॉलर
यु.के. : १०० पाउन्ड

वार्षिक

भारत : १०० रुपये
यु.एस.ए. : १५ डॉलर
यु.के. : १० पाउन्ड

भारत में D.D. / M.O. 'महाविदेह फाउन्डेशन' के नाम से संपर्कसूत्र के पते पर भेजें।

दादावाणी

'आरती', खुद अपने ही आत्मा की

संपादकीय

हिंदु संस्कृति में 'आरती' को भगवान की भाव-भक्ति का एक उत्तम साधन माना जाता है। भाव-भक्ति से भगवान के साथ तार जुड़ता है और उसके द्वारा धर्म मार्ग में प्रगति की शुरूआत होती है। यहाँ अक्रम में आत्मा प्राप्त होने के बाद अब आरती का प्रयोजन क्या है? उसका महत्व क्या है? उसका फल क्या है? परम पूज्य दादा भगवान (दादाश्री), इस विषय में विज्ञान खुला करते हुए बताते हैं कि 'यहाँ अक्रम में होनेवाले मंत्र-विधि-आरती वगेरह ये सब जागृत की भजना है। जो जागृत लोग हैं, उनका विनय करते हैं, प्रेम और आदर करते हैं, जागृत को खुश करते हैं। जागृत की भक्ति, वह प्रकट की भक्ति है और मोक्ष प्राप्ति के लिए प्रकट की भक्ति अनिवार्य है।

अपने यहाँ पर होनेवाली आरती श्री सीमंधर स्वामी भगवान की और दादा भगवान की, उन प्रकट परमात्मा की आरती है। दादा भगवान, यानी ज्ञानीपुरुष के अंदर प्रकट हुए चौदह लोक के नाथ की आरती है। सकल ब्रह्मांड के नाथ की आरती हो रही है। यह बहुत ही ऊँच्च प्रकार की भजना कहलाती है, आराधना कहलाती है। 'जिसकी भजना करे, वह खुद उस रूप होता जाए।' यानी ऐसे प्रकट परमात्मा की आरती और भक्ति करने से खुद उसी रूप होता जाएगा। यह आरतियाँ अलौकिक है। यह आरती पंद्रह क्षेत्रों में तीर्थंकरों तक, और पंच-परमेष्ठी भगवंतों तक पहुँचती है। ऐसी अमूल्य आरती का मूल्य क्या आंका जा सकता है? इसका तो जितना लाभ लिया जाए उतना कम है। यह तो केश बैंक है, नकद है। और तुरंत फल मिलता है।

इस आरती से मन की एकाग्रता रहती है, आर्तध्यान और रौद्रध्यान बंद होते हैं, चिंता हमेशा के लिए चली जाती है, पूरे दिन शांति रहती है, घर में क्लेश नहीं होता और पवित्र-आनंदमय वातावरण बना रहता है। घर में सभी को, बच्चों को अच्छे संस्कार मिलते हैं। यह आरती, यह तो व्यवहार शुद्धि का एक उत्तम साधन दिया गया है। आरती के समय देवी-देवता उपस्थित रहते हैं, जिनके आशीष और कृपा महात्माओं पर निरंतर बरसते रहते हैं। इस प्रकार इस आरती में अनेक लाभ समाए हुए हैं, तो फिर उससे वंचित रहना कैसे पुसाए?

दादाश्री कहते हैं कि जिसकी एक बार आरती करने से मोक्ष हो जाए ऐसी इस अमूल्य आरती का लाभ, जहाँ तक हो सके वहाँ तक खोना नहीं चाहिए। अनंत अवतार के रोगों का नाश करनेवाली यह अद्‌भुत की आरती है। क्योंकि, यह भजना किसकी हो रही है? प्रकट परमात्मा की। दादा भगवान वह मेरा ही आत्मा है, इसलिए यहाँ पर खुद के आत्मा की ही आरती हो रही है। यहाँ भक्ति भी खुद की और सत्संग भी खुद का। यह तो, रियल की भक्ति रियल को ही स्पर्श करती है। यहाँ सब शुद्धात्मा के लक्ष्य सहित होता है। इसलिए अंदर अपना प्रकटपना बढ़ता जाता है, आत्मशक्ति खिलती जाती है। यह व्यक्त मार्ग है। यहाँ हर एक का, अपना खुद का ही व्यक्त हो रहा है।

अपना अहोभाग्य है कि संगमेश्वर की कृपा से अनंत जन्मों का याचकपना मिट गया और प्रकट हुआ अयाचकपना (अभिक्षुकवृत्ति)। आत्मा प्राप्त हो गया, अब बाकी रहा स्पष्टवेदन। और वह प्राप्त हो, उसके लिए यह अपना सूक्ष्मतम प्रयोग है। अंतिम में अंतिम यज्ञ है। अब जीवन में प्रमाद कैसा? भाव-भक्ति और आज्ञा-पालन से अनन्य परमात्मा के साथ अनन्यता साधकर, अन्य से मुक्त होकर हम अपना मोक्ष का काम निकाल लें। वही अभ्यर्थना।

जय सच्चिदानंद

पाठकों से...

'दादावाणी' पत्रिका में मुद्रित पाठ्य सामग्री मूलत: गुजराती 'दादावाणी' का हिन्दी रूपांतर है। कोष्ठक में दिए गए शब्द या तो अंग्रेज़ी शब्द का अर्थ है अथवा शब्द का तात्पर्य स्पष्ट करने हेतु वृद्धित किए गए वाक्यांश है। यहाँ पर 'आत्मा' शब्द को गुजराती और संस्कृत की तरह पुल्लिंग में प्रयोग किया गया है। पाठक जहाँ पर भी चंदूभाई नाम का प्रयोग हुआ है, वहाँ पर खुद को समझें। 'दादावाणी' के इस अंक में अगर कोई बात आप समझ न पाएँ तो प्रत्यक्ष सत्संग में पधारकर समाधान प्राप्त करें। भाषांतर में कोई कमी नज़र आए तो हमें सूचित करने की कृपा करें। ऐसी क्षतियों के लिए हम आपके क्षमाप्रार्थी है।

'आरती', खुद अपने ही आत्मा की

'जागृति', जागृत की भजना से ही

प्रश्नकर्ता : आप जो बुलवाते हैं वे मंत्र, आरती वगैरह क्या हैं? उन सबकी क्या ज़रूरत है?

दादाश्री : ऐसा है, कि यह जो बुलवाता हूँ न, वे पूर्ण जागृत लोगों के नाम लेकर बुलवाता हूँ। जो जागृत हैं, उसकी भजना सिखाते हैं। जो जागृत हैं उन्हें याद करो तो आपकी जागृति बढ़ती है। उसमें, जितने जागृत हो चुके हैं और जितने अभी जागृत हैं, उनके लिए नमस्कार बुलवाए हैं। और उसमें भी जो हाल में अभी जागृत हैं, उनकी बात अधिक है और जो हो चुके हैं उनकी बात साधारण रूप से है। ये नमस्कार तो सभी जागृतों को खुश करते हैं, विनय करते हैं, प्रेम भाव करते हैं। यह तो 'साइन्टिफिक' (वैज्ञानिक) है। जैसा यहाँ सब करते हैं वैसा आप भी करो तो आप पर 'ज्ञानीपुरुष' प्रसन्न होते हैं। खुद की ज़रूरत से ज़्यादा अक्ल लगाए तो फिर बिगड़ा। अपनी तो एक दुनिया है, लेकिन ऐसी दूसरी दुनिया के साथ 'ज्ञानीपुरुष' का तार जोइन्ट है। अभी जो संपूर्ण जागृत हैं उनके साथ हम तार जुड़वा देते हैं, जो हम से कुछ अंशों तक विशेष जागृत हैं, उनके साथ आपका तार जुड़वा देते हैं। ऐसे तार जुड़वा देने से उनके साथ जान पहचान हो जाती है।

नहीं है ज़रूरत आरती की, भगवान को

प्रश्नकर्ता : तो इस आरती का क्या महत्व है?

दादाश्री : यह भगवान की आरती उतारते हैं तो इससे भगवान खुश हो जाते हैं। क्योंकि उसमें उसका विनय का गुण देखते हैं। भगवान के प्रति उसके लगाव को देखते हैं। भगवान को कोई आरती की ज़रूरत नहीं है, भगवान तो भगवान ही हैं।

प्रश्नकर्ता : तो क्या आरती नहीं करें तो चलेगा?

दादाश्री : उन्हें तो चाहिए ही नहीं न! भगवान कहते हैं, कि तुझे खुजली हो रही हो तो कर। गरज़ हो तो सत्रह बार कर। भगवान को क्या ज़रूरत है? भगवान तो सकल ब्रह्मांड के मालिक हैं।

आरती, प्रकट भगवान की

प्रश्नकर्ता : यह जो आपकी आरती उतारी गई, तो आप अपनी आरती क्यों उतरवाते हैं?

दादाश्री : नहीं, यह ऐसा नहीं है। यह मेरी आरती नहीं उतारी भाई। यह तो वास्तव में अंदरवाले 'दादा भगवान' की आरती उतारी थी। यह तो मंदिर है और देहमंदिर में भगवान विराजमान हैं। अत: इस प्रकार सच्चे भगवान की पूजा करते हैं।

मैं कह देता हूँ कि भाई, मेरी आरती नहीं उतारी थी, यह तो अंदर जो 'दादा भगवान' प्रकट हुए हैं उनकी आरती-पूजा हो रही है।

पूर्ण स्वरूप जो अंदर प्रकट हुआ वह

यह जो आपको दिखाई देते हैं, वे क्या 'दादा भगवान' हैं? वे नहीं है 'दादा भगवान'! वे तो 'ए.एम.पटेल' हैं, भादरण गाँव के हैं। 'दादा भगवान' तो जो अंदर प्रकट हुए वे हैं। और मैं तो 'ज्ञानीपुरुष'

कहलाता हूँ, लेकिन पूर्ण स्वरूप नहीं है, पूर्ण स्वरूप तो जो अंदर प्रकट हुआ है, वह है।

उनका स्वरूप क्या है? ज्ञान-दर्शन-चारित्र और तप, वह उनका स्वरूप है। ज्ञान-दर्शन-चारित्र और तप के आधार पर जो अनुभव में आते हैं, वे 'दादा भगवान' हैं। वैसे ही ज्ञान-दर्शन-चारित्र और तप स्वरूप से रहनेवाले 'दादा भगवान' आपके अंदर भी विराजमान हैं। वे, आप खुद ही हो!

यह जो दिख रहे हैं, ये भगवान नहीं हैं। भगवान तो अंदर प्रकट हुए हैं, चौदह लोक के नाथ प्रकट हुए हैं, उनका नाम लेते ही कल्याण हो जाए ऐसा है। नकद है यह तो सारा! लाखों लोग फायदा उठा रहे हैं। इसीलिए हम रोज़ सत्संग में आरती करते हैं।

आरती होती है, खुद भगवान की

प्रश्नकर्ता : सभी अवसरों पर सब जगह आरती करते हैं, उसका क्या हेतु है?

दादाश्री : यह आरती तो काम निकाल दें ऐसी है। क्योंकि, मैं तो 'ज्ञानीपुरुष' हूँ लेकिन आरती खुद भगवान की हो रही है। पूरे ब्रह्मांड के नाथ की हो रही है। वह काम निकाल दे ऐसी है। लोगों को यह मालूम नहीं है इसलिए पूछते हैं लेकिन जानने के बाद पता चलता है। पता नहीं है इसलिए पूछते हैं न? आरती तो, वह जो अंदर भगवान प्रकट हो जाएँ, ऐसी आरती। पूरे विश्व में (ऐसा) एकाध ही व्यक्ति होता है, जिसकी आरती उतारते हैं लोग। बाकी एक्सेप्ट ही नहीं करते न? पूरे हिन्दुस्तान में अपने यहाँ पर ही आरती उतरती है, 'दादा भगवान' की। अन्य किसी जगह नहीं।

नहीं है यह व्यक्तिपूजा

प्रश्नकर्ता : हम लोगों ने आपकी जो आरती उतारी है, आप वह व्यक्तिपूजा क्यों करवाते हैं?

दादाश्री : तब किसकी आरती उतारनी है? और किसकी पूजा करनी है?

प्रश्नकर्ता : हम जिन्हें भगवान मानते हों, उनकी।

दादाश्री : अरे! यह तो खुद ही शिव, महादेवजी खुद, रणछोड़जी खुद, खुद कभी कभार ही आते हैं। तुझे इसकी समझ नहीं होने से तू ऐसा बोल रहा है। यह तो खुद स्वयं ही हैं, यह मूर्ति नहीं है। मूर्ति तो हमारी बनाई हुई होती है। व्यक्तिपूजा का मतैलब तू क्या समझता है? व्यक्तिपूजा के बारे में तू समझता ही नहीं। व्यक्तिपूजा, वह अलग चीज़ है। यह तो ज्ञानीपुरुष की हो रही है। ऐसे, जिनमें, बुद्धि नहीं है, जिनमें अहंकार नहीं है। वर्ना यदि अहंकारी की इस तरह पूजा की जाए, तो ऊपर चढ़ जाएगा। उसका मिज़ाज बढ़ जाएगा। व्यक्ति किसे कहते हैं? अहंकारी होता है, उसे। जो अहंकारी मनुष्य होता है, बुद्धिवाला मनुष्य होता है, उसकी पूजा की जाए तो उसका अहंकार बढ़ता जाएगा। और हममें तो अहंकार नहीं है इसलिए यहाँ पूजा की तो सीधा फायदा हो जाता है। ये व्यक्ति नहीं कहलाते। मैं मालिक ही नहीं हूँ, सत्ताईस सालों से इसका मालिक नहीं हूँ। पड़ोसी की तरह रहता हूँ। फिर मुझे पूजा करवाने का कारण रहा ही कहाँ?

समझ में आए तो अच्छा है। फिट हो जाएगा, चैकनट को घुमाना होता है। तुझे ऐसा लगा कि यह व्यक्तिपूजा है? यह व्यक्तिपूजा नहीं कहलाती। यह तो अंदरवाले भगवान की आरती है, क्योंकि 'मैं' खुद इनसे अलग रहता हूँ, और यह मंदिर है। ये तो मंदिर में भगवान की आरती कर रहे हैं। कभी-कभी ही ऐसा होता है। नहीं होता न? ये ऐसे तो दस लाख वर्षों में आते हैं। लेकिन ऐसा सुना हुआ नहीं होता न? तेरे सुनने में यह नई तरह का आए न, कि यह नई तरह की रामायण! समझ नहीं पाता न! देख तुझे लगता है न, कि सामान्य आदमी का काम नहीं है यहाँ?

प्रश्नकर्ता : सामान्य आदमी का किसी जगह पर काम नहीं है।

दादाश्री : सामान्य आदमी तो कितने सारे हैं, चार अरब लोग हैं, उनमें कितनों को कैसा-कैसा मोह है? निरे मोह से ही भरे हुए हैं! इन मोहवालों

का काम नहीं है। जिनका मोह उतर गया हो, थोड़ा बहुत मोह बचा हो, उनका काम है। व्यक्तिपूजा का रहस्य समझ में आया तुझे?

आरती से बंद आर्तध्यान

प्रश्नकर्ता : नहीं, लेकिन आपका आरती उतारने का कारण क्या है? आरती क्यों उतारते हैं आप?

दादाश्री : आरती तो, यदि भगवान की नहीं उतारें तो और किसकी उतारें? तो फिर भगवान को क्या करें, बताओ। आप जो कहो, वह करें।

प्रश्नकर्ता : यह तो मुझे मालूम नहीं है, इसीलिए तो मैं पूछ रहा हूँ।

दादाश्री : खुद का आर्तध्यान बंद हो जाए, उसके लिए है। जो यह आरती उतारेगा, उसे आर्तध्यान नहीं होगा। आरती में एक बार दादाजी के दर्शन हो जाएँ न, तो फिर आर्तध्यान उड़ जाता है। आरती में और फिर 'दादा भगवान के असीम जय-जयकार' गाते समय के दर्शन, तो खुद भगवान महावीर के दर्शन हैं।

इसे तो यदि समझें न तो आरती में दादा के दर्शन, एक्ज़ेक्ट भगवान महावीर के दर्शन होते हैं और महात्मा यह समझ गए हैं, इसलिए ऐसे दर्शन करते हैं।

और यहाँ पर, मनुष्य की आरती नहीं उतारी जाती, सिर्फ ज्ञानीपुरुष की आरती उतारी जाती है। और वे ज्ञानी भी बुद्धि रहित होने चाहिए। बुद्धिशाली ज्ञानियों की आरती नहीं उतार सकते। आरती तो बहुत बड़ी चीज़ है। जो हो रहा है न, उसमें कुछ भी गलत नहीं है।

कल्पनातीत पद, ज्ञानी का

प्रश्नकर्ता : बाहर के लोगों को तो ऐसा ही दिखता है न कि, आपकी पूजा कर रहे हैं?

दादाश्री : बाहर के लोगों को तो बेचारों को तो इन्हीं आँखों से देखना होता है न? ये आँखें और बुद्धि। देखने का अन्य कोई साधन है नहीं न? उन्हें (ज्ञानीपुरुष को) जब आप पहचानोगे, तब पता चलेगा कि ये कौन हैं! उन्हें मिलने से आपको क्या फल प्राप्त होता है? तो यह कि हमेशा के लिए चिंता चली जाती है। खुद स्वयं ही भगवान बन जाएँ ऐसी जगह है यह। यह तो, दुनिया में कभी भी सुना न हो, पढ़ा न हो, सोचा न हो, ऐसा बहुत उच्च पद है। इसलिए एकदम कैसे समझ में आएगा? यह तो, बहुत बुद्धिशाली हो, तब भी समझ नहीं पाए। और फिर बोर्ड भी नहीं, बाकी जगहों पर तो बोर्ड होते हैं या फिर भगवा कपड़े या फिर सफेद कपड़े होते हैं।

प्रश्नकर्ता : अभी भी ज़रा व्यक्तिपूजा के बारे में और थोड़ा क्लैरिफिकेशन (स्पष्टता) चाहिए।

दादाश्री : व्यक्तिपूजा तो हो ही नहीं सकती। पूजा, आरती तो किसी की भी नहीं उतारी जा सकती। आरती तो सिर्फ यहाँ अंदर भगवान प्रकट हुए हैं इसलिए उतारने देते हैं, वर्ना उतार ही नहीं सकते।

जिनमें क्रोध-मान-माया-लोभ न हों, उनकी आरती उतार सकते हैं। हम गाली दें फिर भी जो गुस्सा नहीं करें बल्कि आशीर्वाद दें, उनकी आरती उतारी जा सकती है।

यह है आत्मा की पुष्टि का साधन

प्रश्नकर्ता : तो फिर यह आरती-पूजा करें किसी भी भगवान की या दादा भगवान की, तो उसकी क्या ज़रूरत है मोक्ष के लिए?

दादाश्री : ऐसा है न कि मोक्ष के लिए जो कुछ भी किया जाता है, वह सब आत्मा की पुष्टि के लिए है और कुछ भी नहीं है। और जो पाँच आज्ञा दी हैं न, उनके अलावा और कुछ भी नहीं करें तो भी चलेगा। परंतु दादा भगवान, वे तो ज्ञानीपुरुष, वही खुद का आत्मा है। अत:, उन 'दादा भगवान' के लिए जो भी करते हो। वह आपके आत्मा के लिए ही करते हो। श्रीमद् राजचंद्र ने क्या कहा है? 'ज्ञानीपुरुष वही खुद का आत्मा है।' इसलिए उनका

कहा हुआ करो, उनकी सेवा-भक्ति करो। जिन्हें कोई सेवा नहीं चाहिए, उनकी सेवा करने में बहुत फायदा है। जिन्हें सेवा चाहिए ही नहीं, उनकी सेवा करने में बहुत लाभ है और अगर सेवा चाहिए, तो वह भिखारी में माना जाता है। जब किसी भी तरह की भीख नहीं हो, तब वे ज्ञानीपुरुष कहलाते हैं। जहाँ भीख खत्म होती है, वहाँ भगवान की पावर ऑफ अटोर्नी मिल जाती है। भगवान पद की पावर ऑफ अटोर्नी मिल जाती है। यानी कि भगवान, तीन लोक के नाथ, दादा भगवान हमारे वश हो गए हैं।

चूकना मत लाभ, इस अलौकिक आरती का

एक बार जिनकी आरती करने से मोक्ष हो जाए, ऐसे इन ज्ञानीपुरुष की यदि कभी आरती करें तो भी बहुत हो गया। अंदर सब शांत हो जाता है। आरती करोगे तो आपके पंद्रह दिनों का जो नुकसान हुआ होगा, वह खत्म हो जाएगा। ऐसा नियम है कि जब तक हम यहाँ बैठे रहें, तब तक घर पर कुछ भी बिगड़नेवाला नहीं है। आप तो यहाँ से घर वापस सात बजे जाओ तो चलेगा न? आरती किए बगैर नहीं जाना चाहिए।

आज के एक दिन आरती की न, तो बहुत हो गया। फिर बाद में यहाँ रोज़ एक-दो घंटे का लाभ लेते रहना। यह तो गंगाजी का पानी है। जितनी डुबकी लगाओगे न, तो जिस प्रकार गंगाजी शरीर का मैल निकालती हैं न, उसी प्रकार यहाँ पर मन का, बुद्धि का, सारा मैल निकल जाता है।

अपनी आरती के समय बहुत सारे देवी-देवता उपस्थित रहते हैं। हाँ, यहाँ कंपाउन्ड में सभी जगह हाज़िर हो जाते हैं। अब यह सूक्ष्मभेद सभी को समझ में आना चाहिए न? और बैठते हैं तो लाभ तो मिलता है न? कुछ अंतरशांति खुद को समझ में आती है। और अपनी यह आरती अलौकिक है। लोक में हो नहीं, ऐसी अलौकिक है। हो सके तो खास तौर पर आरती का खास लाभ लेना।

आरती, सीमंधर स्वामी की

प्रश्नकर्ता : अपने मंदिर में सीमंधर स्वामी की आरती करने का क्या प्रयोजन है?

दादाश्री : अभी जो भगवान ब्रह्मांड में हाज़िर हैं, ये सब उनकी आरती करते हैं। वे मेरे थ्रू (माध्यम द्वारा) करते हैं और मैं वह आरती उन तक पहुँचाता हूँ। मैं भी उनकी आरती करता हूँ। डेढ़ लाख वर्षों से भगवान हाज़िर हैं, उन्हें आरती पहुँचाता हूँ।

प्रश्नकर्ता : क्या आपको सीमंधर स्वामी के दर्शन हुए हैं?

दादाश्री : हमारा सीमंधर स्वामी के साथ ही अनुसंधान रहता है पूरे दिन! और ये सब लोग सीमंधर स्वामी की आरती वगैरह रोज़ बोलते ही रहेंगे, क्योंकि ये जीते-जागते तीर्थंकर हैं।

दादा आरती उतारे, स्वामी की

एक बार हम पैंतीस-चालीस लोग बस में वहाँ गए थे। यहाँ मेहसाणा में मैंने सीमंधर स्वामी की आरती उतारी थी। तब वहाँ पुजारी ने कहा कि 'दादाजी, आज आप आरती कीजिए।' तब मैंने कहा कि, यदि मैं आरती करूँगा तो, ये सभी हमारी आरती बोलेंगे, आपकी आरती नहीं बोलेंगे। तब वापस उस पुजारी ने क्या कहा कि 'हमारीवाली आरती तो रोज़ करते हैं, लेकिन आपकीवाली आरती कीजिए आज।' इसलिए, फिर मैंने खुद सीमंधर स्वामी की आरती उतारी थी और जो अपने सभी महात्मा थे वहाँ पर, उन्होंने अपनी दादाई आरती गाई थी। अपने यहाँ जो गवाते हैं, दादावाली आरती, वही आरती वहाँ गवाई थी। उनके सामने, सीमंधर स्वामी के सामने, और मैंने खुद मेरे हाथ में थाली ली थी, फिर तो बात ही क्या करनी! 'कौन, किसकी आरती उतारता है?' क्या समझा तू? यह आरती उतारनेवाला ब्रह्मांड का नाथ है। मालिकी रहित। किसी भी प्रकार की मालिकी नहीं जताता, ऐसा यह ब्रह्मांड का नाथ बैठा है।

...और तब बरसा अमृत, प्रभु नयनों में से

उसके बाद तो मुझे पता चल गया कि इन सीमंधर स्वामी भगवान की आँखों में से अमृत बिंदु टपकते रहे। वह मुझे पता चल गया था, लेकिन मैं बोला नहीं।

फिर हम सब लोग वहाँ गए, जहाँ ठहरे हुए थे। फिर वह पुजारी क्या कहने आया? 'साहब, आज आपने ऐसा क्या चमत्कार किया कि भगवान की इस मूर्ति में बहुत बदलाव हो गया? कभी भी भगवान की आँखों में से आँसू नहीं गिरे थे। आज कितने दिनों बाद, यहाँ इनके पधराने के बाद, इनकी प्रतिष्ठा होने के बाद आज ऐसा हुआ! आपने क्या किया कि भगवान की आँखों में से निरा अमृत बरस रहा है! कभी भी ऐसा नहीं देखा था आज तक। आपने जो यह आरती उतारी, उस घड़ी कुछ चमत्कार किया आपने!'

मैंने कहा, 'हमने कोई चमत्कार नहीं किया है।' मुझसे कहा, 'क्या किया आपने? प्रतिष्ठा की क्या?' मैंने कहा, 'नहीं भाई, हमने कोई प्रतिष्ठा-व्रतिष्ठा, कुछ भी नहीं किया। प्रतिष्ठा करने का समय नहीं है। प्रतिष्ठा करें तो ऐसा हो सकता है कभी, लेकिन प्रतिष्ठा नहीं की है। हमने आरती उतारी है। यह सहज आरती उतारी, इसी में ऐसा हो गया।' तब कहता है, 'अंदर से पानी बह रहा था, वह मैंने देखा था।'

हमने आरती उतारी भगवान की, यह तो नकद फल देती है। मूर्तियाँ भी बोलने लगती हैं। ज्ञानीपुरुष यानी कैसा होता है? जहाँ पत्थर की मूर्तियाँ भी बोलने लगें, वे ज्ञानीपुरुष हैं?

देवता हाज़िर हो जाते हैं, आरती के समय

प्रश्नकर्ता : लेकिन दादा, आँखों में से अमी बरसा, उसका क्या कारण है?

दादाश्री : सबकुछ हो सकता है। यह साइन्टिफिक नहीं है, बल्कि यह देवों का काम है। हमारी आरती में देवता हाज़िर रहते हैं, लेकिन आपको नहीं दिखते। देवता सूक्ष्म रूप से आते हैं और सूक्ष्म रूप से काम करते हैं। उसमें कोई दिक्कत नहीं आती। मैं नहीं कहता था कि 'ऋषभदेव भगवान हमारे साथ बात करते थे?' और लोग धर्म की तरफ मुड़ें उसके लिए शाशनदेव सबकुछ करते हैं। हम सब एक्सेप्ट करते हैं।

आरती में सभी देवता हाज़िर रहते हैं। ज्ञानीपुरुष की आरती ठेठ सीमंधर स्वामी तक पहुँचती है। देवी-देवता क्या कहते हैं कि 'जहाँ परमहंस की सभा हो, वहाँ हम हाज़िर रहते हैं।' अपनी आरती किसी भी मंदिर में गाओ, तो भगवान को हाज़िर होना पड़ता है।

इस आरती के समय आपको जो फूल चढ़ते हैं, वे पहले हम देवी-देवताओं को चढ़ाते हैं और बाद में वे आपको चढ़ाते हैं। जगत् में देवी-देवताओं पर चढ़ाए हुए फूल किसी को नहीं चढ़ते हैं, ये तो आपको ही चढ़ाए जाते हैं। उनमें दैवीय शक्तियाँ रखी हुई हैं। इस समय मन-वन सब बदल जाता है, इसलिए आराम से शक्तियाँ मिल जाती हैं। उससे मोक्ष तो रहेगा और ऊपर से आपको संसारी विघ्न भी नहीं आएँगे।

आशीष बरसें दादाजी के, पुष्पवृष्टि द्वारा

प्रश्नकर्ता : एक-एक व्यक्ति पर पुष्प वृष्टि करते समय आप मन में क्या कहते हैं?

दादाश्री : वह तो देवी-देवताओं की कृपा है। आरती के समय देवी-देवता हाज़िर रहते हैं। हमारे हाथों से जो ये फूल गिरते हैं न! लेकिन अब साँस (तबियत) के कारण फूल वगैरह सब बंद हो गया है, नहीं तो ढेर सारे फूल बरसाते थे।

१९७३, में हम सब ३८ दिन की यात्रा में गए थे। जब शाम होती थी न, तब सभी मिलकर आरती करते थे, 'दादा भगवान' की, बस में बैठे-बैठे ही।

शाम होते ही आरती शुरू हो जाती थी लेकिन फिर फूल कहाँ से लाते बस में? फूल नहीं होते थे लेकिन आरती करते थे। फूल डालने के समय, फूल

नहीं होते थे, तब भाव फूल डालते थे हाथ में कुछ भी नहीं होता था। और अगर होता तो सिर पर हाथ फेरकर फूल डालते थे। यह यात्रा तो देखने लायक थी।

कषाय रूपी मल निकलें, आरती से

हम सब जब यह आरती करते हैं, तब हास्य देखा है न ज्ञानीपुरुष का! वह नाभि का हास्य है। हास्य तो नाभि से ही फूटना चाहिए। ये तो यहाँ गले से ही हँसते हैं, उसका क्या कारण है? अंदर मल भरा हुआ है इसीलिए। आरती में सभी मल निकल जाते हैं। इस आरती में हास्य खुले, इसलिए मैं यह रास्ता बताता हूँ। ताकि आपके अंदर का सारा मल निकल जाए और यह नली साफ हो जाए तो नाभि का हास्य निकले इसलिए मैं यह करवाता हूँ। सिर्फ इस आरती के समय आपका हास्य खुला करवाने के लिए करते हैं। एकदम अंदर-अंदर तक कचरा भर गया हो न नली में, तो नाभि से वह कचरा निकल जाता है धीरे-धीरे, और कचरा निकला कि हास्य उत्पन्न होगा। जिसका भी, हास्य नाभि से निकला वह भगवान बन गया। सभी के हास्य कषायों से स्थंभित हो चुके हैं।

कर्म रहित हास्य, तीर्थंकर भगवान का

अन्य किसी काल में मुक्त हास्य देखने में नहीं आया है, तीर्थंकरों के अलावा। तीर्थंकर के अलावा मुक्त हास्यवाला कोई और पुरुष नहीं हो सकता। मुक्त हास्य को देखें न तभी हमें हँसना आएगा, नहीं तो नहीं आएगा। उस घड़ी दुनिया भूल जाते हैं। वैसा हास्य आए, तो काफी कुछ कर्म उल्लास में ही उड़ जाते हैं। इसीलिए हमें यह गरबा करवाना पड़ता है न, 'दादा भगवान' का..., उसके उल्लास में आकर आपके कितने ही कर्म नष्ट हो जाते हैं, क्योंकि कभी हास्य उत्पन्न हुआ ही नहीं था न! सभी लोगों में हास्य उत्पन्न नहीं होता। दो लोगों का हास्य अंदर से उत्पन्न हो, तो दो लोगों का मुँह लटका हुआ दिखता है, जबकि यह तो सभी में उत्पन्न होता है। तीर्थंकरों के अलावा अन्य किसी का कर्म रहित हास्य नहीं होता जो कि इस काल में उत्पन्न हुआ है। इन ज्ञानीपुरुष को जब देखो तब, रात के दो बजे भी, इनका एक ही प्रकार का हास्य होता है। ज्ञानीपुरुष और अक्रम-विज्ञान है, वह काम निकाल दें, ऐसा है। सभी कर्मों को भस्मीभूत कर डालें, ऐसा है। सर्वस्व कर्मों को भस्मीभूत कर दे, ऐसा है यह। अतः आरती का जो फल है न, वह बहुत ऊँचा है।

ज्ञानी बर्तें, सदा वीतराग

प्रश्नकर्ता : दादा, जब आरती हो रही थी, तब एक-दो बार आप ऐसे अंदर उतर जाते थे, उसका क्या कारण है?

दादाश्री : नहीं, नहीं। वीतरागता ही रहती है। अंदर वहाँ क्या देखें? अंदर तो, ये सभी डॉक्टरों के काटने पर जो दिखता है वही दिखाई देता है, अंदर और क्या देखना है?

प्रश्नकर्ता : यानी, वह पूरा.....?

दादाश्री : देखनी है वीतरागता। वीतरागता, यानी वे उल्टा बोलें तब भी द्वेष नहीं और सीधा बोलें तब भी राग नहीं। वीतरागता देखनी है।

'मैं' अत्र, तत्र, सर्वत्र

प्रश्नकर्ता : हम सभी आपकी आरती गा रहे थे, उस समय आप किसका ध्यान कर रहे थे?

दादाश्री : हमारा ऐसा (लौकिक) ध्यान नहीं होता। हमारा ध्यान, इन सभी में 'एक ही' यही हमारा ध्यान होता है। दूसरा यह, कि जो नहीं है वह नहीं है और जो है वह है। मुझे तो, इस जगत् के जीवमात्र में 'मैं हूँ' ऐसा ध्यान रहता है। ये सब 'मैं ही हूँ', 'मैं ही हूँ', 'मैं ही हूँ' मुझे यही ध्यान रहता है। हमारा और कोई ध्यान नहीं होता। अलग नहीं है यह, मैं ही हूँ सभी में।

प्रश्नकर्ता : ठीक है।

दादाश्री : वो तो बुद्धि से जुदा लगता है। बुद्धि

खत्म हो गई तो एक ही है। जैसे कि जब सिल्लियाँ अलग-अलग होती हैं, तब वे सोने की सिल्लियाँ कहलाती हैं और ढेर बनाया हो, तब वह सोना कहलाता है।

प्रश्नकर्ता : दादा, लगभग पंद्रह मिनिट तक चली आरती और हमें आरती की हर एक लाइन में आपके मुख (मुँह) के परिणाम दिखाई दे रहे थे। उसका क्या कारण है?

दादाश्री : उन सभी के साथ एकता-अभेदता हो जाती है। यह, यहाँ जो सभी हैं उतने ही नहीं, बल्कि सभी, पूरे जगत् के साथ अभेदता। बुद्धि का छींटा भी मुझ में नहीं है, क्या यह जानते हो आप? बुद्धि हो, तभी झंझट होगी न? देखो न, आप में बुद्धि है तभी वह कितनी झंझट करती है।

अवस्था भिन्न-भिन्न किस वजह से?

प्रश्नकर्ता : 'दादा भगवान के असीम जय-जयकार हो' तथा 'आरती' के समय आप जिस दृष्टि से देखते हैं, वह अवस्था और आप सत्संग करते हैं तब उस अवस्था में फर्क है क्या?

दादाश्री : फर्क तो है। उसमें बहुत फर्क है।

प्रश्नकर्ता : यानी क्या फर्क है, दादा?

दादाश्री : मैं आरती में हन्ड्रेड परसेन्ट शुद्ध होकर बैठता हूँ। उस समय, हम भगवान में एकाकार हो जाते हैं और अभी (सत्संग करते हैं तब) जुदा रहते हैं। इस समय यह टेपरिकॉर्ड बज रहा है न, उसके ज्ञाता-दृष्टा की तरह रहते हैं।

आरती, 'व्यवहार'-'निश्चय' से

व्यवहार से आरती उतारी जाती है।

प्रश्नकर्ता : व्यवहार से?

दादाश्री : व्यवहार से ही न और दूसरा क्या? निश्चय में तो आरती होती ही नहीं न!

प्रश्नकर्ता : यानी हम आपकी आरती उतारते हैं, वह भी क्या व्यवहार से है?

दादाश्री : आपके लिए निश्चय से और मेरे लिए व्यवहार।

प्रश्नकर्ता : ऐसा? वह क्यों दादा?

दादाश्री : आपको तो अभी निश्चय पूरा करना है। आपको तो अभी सहारा का रेगिस्तान पार करना है, और मैं तो पार करके बैठा हूँ।

ज्ञानी की जैसी लेश्या, वैसी परिणति

प्रश्नकर्ता : दादा, आपको आरती में शुक्लध्यान होता है? लेश्या नहीं?

दादाश्री : ध्यान शुक्ल होता है, लेश्या नहीं। लेश्या सिर्फ ज़्यादातर पित्त और पद्म में रहा करती है। घड़ीभर पित्त में होती है, घड़ीभर में कभी पद्म में जाती है। शुक्ल में संपूर्ण रूप से नहीं आ सकती। शुक्ल में तो हमारी कभी-कभी आती हैं। वर्ना हमारा पद्म में ही होता है।

प्रश्नकर्ता : उस वक्त प्रकाश जैसा होता है आपको? जब शुक्ल लेश्या होती है, तब प्रकाशमान लगता है क्या?

दादाश्री : हाँ, लगता है, लगता है तब वह प्रकाश, जब हम शुक्ल लेश्या में होते हैं न, तब आपको सबकुछ अलग तरह का दिखेगा।

प्रश्नकर्ता : हमें भी?

दादाश्री : हाँ, आपको भी दिखेगा, सबकुछ।

लेश्या अर्थात् क्या यह मैं आपको आपकी भाषा में समझाता हूँ। कोई गोरा लड़का आपने अपने यहाँ काम पर रखा हो, और उसने चोरी की तो उसका चेहरा काला सा पड़ जाएगा न! यह पता चल जाता है न? हाँ, यह लेश्या है। ज्ञानीपुरुष को तो पता चलती ही है किन्तु आपको भी बुद्धि से मालूम पड़ जाता है कि इसका चेहरा काला पड़ गया। नीचेवाली लेश्याएँ खटकती है। छः प्रकार की लेश्याएँ हैं, कृष्ण, कपोत, नील, पित्त, पद्म, शुक्ल। जीवमात्र इन छः प्रकार की लेश्या में होता है।

इस काल में शुक्ल लेश्या नहीं होती किन्तु यह तो 'अक्रम' है इसलिए ऐसा है। आरती करते हैं उस समय हमारी शुक्ल लेश्या होती है। किसी-किसी टाइम पर ऐसा होता है। ऐसा है हमारा सब। और जब (यहाँ) गुरुपूर्णिमा का उत्सव मनाते हैं, तब पूरा दिन शुक्ल लेश्या होती है।

सत्संग करते हैं तब पद्म लेश्या होती है लेकिन आरती का वह उतना समय शुक्ल लेश्या होती है। इसीलिए तो आरती उतारने के लिए कहते हैं न!

यहाँ इस तरह बैठे होते हैं, उस समय पाँचवी लेश्या बहुत कम दिखती है। लेश्या यहाँ आकर बैठने के बाद चौथी भी हो सकती है और पाँचवीं भी हो सकती है। कई बार जब पाँचवी हो जाती है, उस समय आपको खूब आनंद प्रकट होता है। तो क्या ऐसा कभी प्रकट नहीं हुआ?

प्रश्नकर्ता : दादा, भीतर में आनंद तो भरपूर है। यहाँ आपकी हाज़िरी में तो भरपूर प्रकट होता है।

दादाश्री : नहीं, फिर भी भरपूर, यानी फिर भरपूर में भी फिर और ज़्यादा भरपूर होता है। आए, वहीं से भरपूर तो है ही, लेकिन वह कैसी? चौथी और जब भरपूर हो जाए, तब पाँचवी होती हैं।

इसलिए तो कवि ने गाया है कि 'आरती और विधि के समय पूर्ण पद मिले।' उसमें भी यहाँ पर चौथी और पाँचवी! लेश्या अपने आप बढ़ती ही रहती है। यह आरती में तो आपकी लेश्या बहुत ऊँची हो जाती है। मेरी शुक्ल हो जाती है, तब आपकी पित्त में से पद्म हो जाती है।

ऊपर की लेश्याएँ यों जल्दी अनुभव में नहीं आती। और ये ऊपर की तीन लेश्याएँ अनुभव में आ गई तो समझना कि मोक्ष नज़दीक आ गया।

भगवान की शुक्ल लेश्या देखने लायक होती है। ऐसी, कि देखें तो वहाँ से हटने का मन नहीं होता।

लेश्या तो, कहाँ भगवान की लेश्या! छट्ठी लेश्या है! कभी-कभी जब हम चखते हैं, तब समझ में आती हैं। भगवान को वैसा हमेशा रहता होगा तो तो फिर जब वह पद कैसा होगा? आप जब पाँचवी को चखते हो, तब कैसा आनंद होता है? तो दादा हमेशा पाँचवी में रहते होंगे, तब उन्हें कैसा रहता होगा?

प्रश्नकर्ता : अंदर का सुख काफी रहता है।

दादाश्री : तो फिर जब हमें यह छट्ठी आती है कभी, तब हमें ऐसा लगता है, कि अब तो परिवर्तन हो गया। उसकी तो बात ही कुछ और है। वह खून अलग, बात अलग, वाणी अलग, मन अलग, आचरण अलग, परिणति अलग होती है।

उपयोग रहना चाहिए, आरती-सत्संग में ही

प्रश्नकर्ता : हम समूह में (सामूहिक रूप से) जब पद गाते हैं, तब कुछ लोग गा रहे होते हैं और कुछ लोग बातें कर रहे होते हैं, तो फिर यह विराधना कही जाएगी न?

दादाश्री : वह ज्ञान की विराधना कहलाती हैं। सत्संग की विराधना कहलाती हैं। वह विराधना गलत हैं। आम तौर पर, यह दर्शन को नहीं रोकती, लेकिन फिर भी गलत है वह। बातों-वातों में नहीं पड़ना चाहिए। यहाँ सत्संग में आते हो, किसी और झंझट में नहीं पड़ना चाहिए।

प्रश्नकर्ता : यानी, कल जो यहाँ प्रतिक्रमण करना है, वह ऐसी विराधनाओं का ही प्रतिक्रमण करना है?

दादाश्री : हाँ, वह करने का कराण यह है कि सत्संग में ऐसा-वैसा नहीं होना चाहिए। जब गाते रहे हों, उस समय गाना चाहिए। फिर भी यदि नहीं बोलना हो, तो धीरे से बोलना। लेकिन उसमें शामिल रहें, तभी उसे गाया है, ऐसा कहेंगे। दूसरे में शामिल होते हैं, तो वह विराधना कहलाती है। आरती के समय, कुछ उल्टा-सीधा किया हो, तो विराधना हो गई। हाँ, आरती के समय भी बहुत लोग ऐसे बातें करते हैं।

दादाश्री : ऐसा नहीं होना चाहिए।

वह विराधना धुलती है, प्रतिक्रमण से

वह समझ में आया न तुझे? अब आज से फिर कोई भी विराधना मत करना, यहाँ जो आज तक की है उसकी माफी माँग लेना। कैसे माँगोगे माफी? इन दादा को याद करना। यह दादा का चेहरा याद रहता हैं न तुझे?

प्रश्नकर्ता : हाँ।

दादाश्री : घर पर, सोते समय दादाजी के चेहरे को याद करके कहना, कि 'दादा, मैंने वहाँ पर आरती में विराधना की थी, वह मेरी भूल है। वह मेरी ज़िम्मेदारी पर की थी, इसलिए मेरी ज़िम्मेदारी से मैं यह माफी माँग लेता हूँ। लेकिन अब मुझे मुक्त कर दीजिए।' तो तू मुक्त हो जाएगा।

इस विराधना का मैं नाश कर दूँगा। लेकिन यहाँ पर की गई विराधना, उस विराधना का नाश तो कोई नहीं कर सका है। मगर छुड़ानेवाला चाहिए न फिर?

विराधना से नुकसान किसे?

कितनी विराधनाएँ हो जाती हैं! यहाँ आरती चल रही होती है, तब वहाँ वह गप्पे मार रहे होता है। तू ने बहुत विराधनाएँ की हैं, वह मैं जानता हूँ कि इन्हें मार पड़नेवाली है। मार खा-खाकर ठिकाने आएगा, इनका। बहुत भयंकर विराधनाएँ की हैं। यहाँ आरती हो रही होती हैं और तब गप्पे मारते हैं सभी। बुलवाने पर तो आरती के दर्शन करते हैं। वह मैं जानता हूँ कि यह आवेश में आकर, कुट-कुटकर भी सीधा तो होगा न! मैं इसी आस में बैठा हूँ, इसलिए डाँटता नहीं हूँ।

आरती के समय अलिप्त, रहना व्यवहार से

प्रश्नकर्ता : दादा, यानी कि जब यहाँ आरती हो रही हो तब सभी लोगों को आरती में ही मन रखना चाहिए न, बातें नहीं करनी चाहिए न?

दादाश्री : नहीं बातें नहीं। कहीं, कोई बात हो रही हो और आपसे पूछे, और उस समय आप बात ना करो तो वह भी गलत है। तब उसके साथ थोड़ी बात करके, आपको कहना चाहिए कि आरती में... सिर्फ आरती में ही ध्यान और व्यवहारिक सब बाद में।

प्रश्नकर्ता : लेकिन, डिस्टर्ब (परेशान) करें तो चलेगा? पद गा रहे हों, तब उनके साथ बातें करने बैठ जाते हैं।

दादाश्री : उसे भी ऐसा पसंद होगा, तभी ऐसा करते होंगे न? मुझे क्यों नहीं करते? वह जानता है कि दादाजी को ठीक नहीं लगता। इसलिए दूसरे दिन बंद कर देगा। अतः पसंद हो, तभी यह सारा जगत् चिपकता है। वर्ना जगत् में कौन चिपकता है? हमें खुद को पसंद हो तभी चिपकता है। वर्ना कोई चिपके ऐसा नहीं है।

घर पर भी, अवश्य करना आरती

प्रश्नकर्ता : घर पर आरती करने का क्या महत्व है?

दादाश्री : आरती करते हैं उसका महत्व अन्य कुछ नहीं, लेकिन आरती का फल मिलता हैं आपको। आरती का फल, यहाँ मेरी हाज़िरी में जो मिलता है न, ऐसा फल किसी और जगह नहीं मिलता। वह तो हमारा सेट किया हुआ है। फिर भी आरती का बहुत उच्च फल मिलेगा। घर पर करोगे तब भी।

प्रश्नकर्ता : आपके पास बहुत नहीं आते हों और घर पर ही भक्ति करते हों, आपकी आरती करते हों रोज़, तब भी लाभ मिलता है क्या?

दादाश्री : यह तो सब लाभ मिलता है।

यहाँ याद करो और वहाँ पहुँचे उन्हें

इसलिए, यह आपको समय मिले न, तब देर-सवेरे भी उसका सदुपयोग करना। मैं नहीं होता तब भी यहाँ पर आरती वगैरह सबकुछ होती है। वह जब यहाँ पर नहीं होता हूँ मैं, तब सिर्फ शरीर ही

नहीं होता, दूसरे स्वरूप में तो मैं यहाँ पर हाज़िर ही रहता हूँ। अत: आप ऐसे दर्शन करते हो न तो वे पहुँच जाते हैं।

इन दादा की आरती पंद्रह क्षेत्रों में तीर्थंकरों तक, पँच-परमेष्ठी भगवंतो तक पहुँचती है। यह आरती करने के बाद मुसीबतें आएँ तो कहना, नहीं आएँगी।

फायदा नकद का, नहीं उधारी

अत: यह, 'दिस इज़ दी केश बैंक (यह नकद बैंक है)।' आपको उधार चाहिए या केश चाहिए?

प्रश्नकर्ता : केश चाहिए।

दादाश्री : यह केश बैंक है। अभी तक तो वे उधारी बैंक हैं न, उनसे लोग उकता गए हैं। यह नकद मिले वैसा चाहिए न? यह सब नकद है जिससे तुरंत फल मिलता है। इसलिए, इतना करना, ताकि आपका मन एकाग्र रहेगा और दिनभर की शांति रहेगी। और जितना अधिक करोगे, उतना अधिक फायदा होगा। जितना भी अतिरिक्त टाइम मिले, वह सब इसमें लगाओ। नौकरी कर रहे हों तो नौकरी करना और बाकी बचा समय इसके लिए निकालना।

आरती से मिलते हैं उच्च संस्कार

घर पर रोज़ आरती करोगे न, तो बाहर का कोई भी वातावरण पैठ नहीं पाएगा। बाहर तो कलियुग का वातावरण, दुषमकाल पैठेगा नहीं आपके घर में। इस आरती का प्रभाव इतना है कि, दिनभर दुषमकाल के वातावरण को पैठने नहीं देगा।

इसलिए सभी ने यह सेट कर दिया है, ताकि पूरे दिन, दूषित वातावरण ही खड़ा नहीं हो। जिनके घर ये 'दादा' की आरती उतरती है, उनके वहाँ तो वातावरण बहुत ही उच्च प्रकार का रहता है। आरती, वह तो विरति! जिसके घर में आरती होती है, उसके घर का पूरा वातावरण ही बदल जाता है। खुद तो 'शुद्ध' होता जाता है और साथ ही घर के बच्चों और बाकी सभी को उच्च संस्कार मिलते हैं।

आरती में समाए, लाभ अनेक

प्रश्नकर्ता : ये छोटे बच्चे पूछते हैं कि आरती क्यों करते हैं? तब उन्हें क्या जवाब दें?

दादाश्री : आरती करने से सारी इच्छाएँ पूरी होती हैं। और आरती से क्या फायदा होता है, वह तो आरती करने से भी पता चल जाए, ऐसा है। आरती में सबकुछ लिखा हुआ है। उन्होंने पढ़ी नहीं होगी आरती? उसमें सबकुछ लिखा हुआ है, समझाना। आरती से तो बहुत लाभ मिलता है, चिंता-विंता सब चली जाती है।

प्रश्नकर्ता : उन लोगों को समझाना बहुत मुश्किल है। हम करते आएँ हैं इसलिए करते हैं, लेकिन बच्चे बहुत प्रश्न पूछते हैं।

दादाश्री : बच्चे पूछें तो जवाब देना ही पड़ेगा। वर्ना चलेगा नहीं न! लेकिन फिर समझने के बाद जिस तरह वे लोग आरती करते हैं वैसे और कोई नहीं करता। फिर वे पकड़ नहीं छोड़ते। वहाँ लॉस एन्ज़ल्स में अब बच्चे इसे छोड़ते नहीं है।

प्रश्नकर्ता : प्रसाद क्यों बनाते हो? थाल क्यों चढ़ाते हो, यह सब पूछते हैं बच्चे?

दादाश्री : हाँ, सब पूछते हैं और इतनी समझ है तभी तो पूछते हैं न! नहीं तो नासमझीवाला क्या पूछेगा? पहले के बच्चे पूछते ही नहीं थे। पूछें ऐसे थे ही नहीं, लेकिन ये तो स्मार्ट हैं।

प्रश्नकर्ता : ऐसा क्यों करते हैं? प्रसाद और थाल क्यों चढ़ाते हैं? यह समझाइए।

दादाश्री : हमारी सारी डिफिकल्टी (मुश्केली) खत्म हो जाएँ, इसलिए। यह व्यवहार में डिफिकल्टी आती हो न, वे सभी खत्म हो जाती हैं। हमें संसार में डिफिकल्टी अच्छी नहीं लगती और पुसाती नहीं है न! यदि अड़चनें आएँ तो पुसाता नहीं है न! वे सब अड़चनें दूर हो जाती है।

बच्चों को शामिल करो आरती में

अब धीरे-धीरे यह आरती सभी लोगों के यहाँ गवानी चाहिए। ताकि उनके घर के सभी बच्चे संस्कारी बनें और नया वातावरण उत्पन्न हो जाए।

छोटे बच्चों को समझाना चाहिए कि सुबह नहा-धोकर भगवान की पूजा करनी चाहिए और रोज़ संक्षेप में बोलें कि, 'मुझे तथा जगत् को सद्‌बुद्धि दीजिए और जगत् कल्याण कीजिए।' इतना बोलेंगे तो उन्हें संस्कार मिले कहलाएगा, और माँ-बाप का कर्मबँधन छूट जाएगा। और दूसरा, आपको बच्चों को 'दादा भगवान के असीम जय-जयकार हो' रोज़ बुलवाना चाहिए। हिन्दुस्तान के बच्चे इतने सुधर गए हैं कि सिनेमा नहीं जाते। शुरु के दो-तीन दिन थोड़े टेढ़े-मेड़े रहते हैं, लेकिन बाद में दो-तीन दिनों बाद, अंदर स्वाद उतरने पर बल्कि उसीको याद करते हैं।

आरती से होता है, संस्कार सिंचन

इसलिए यह आरती नियमित कर देना। इन सभी ने नियमित आरती शुरू की है न, जैसी यहाँ पर गाते हैं न, बच्चे वैसी आरती गाएँ तो संस्कारी बनेंगे। बच्चों को संस्कारी बनाना आपका फर्ज़ है। क्योंकि बच्चों को संस्कार देना आपकी ज़िम्मेदारी है। गैरज़िम्मेदार नहीं हैं। आपके यहाँ जो बच्चे बनकर आए, उनके प्रति गैरज़िम्मेदार नहीं रहना है। इससे उन्हें संस्कार मिलेंगे न। बच्चों को संस्कारी बनाना तो बच्चों को इसमें इन्टरेस्ट आ जाएगा। सभी जगह आरतियाँ चलती हैं न, तो बच्चों को बहुत इन्टरेस्ट आ जाता है।

और आरती में बच्चे-बच्चियाँ सभी खड़े रहते हैं। घर के सभी बच्चे, इतने-इतने से बहुत मज़े करते हैं। लोग कहते हैं कि, पड़ोसी के बच्चे भी आते हैं। यह आरती होने के साथ ही ये सारा वातावरण ही नए प्रकार का उत्पन्न हो जाता है।

आरती की नियमितता कर दी गई हो न, तो बच्चों में कुछ फर्क आ जाता है! बच्चों के मन अच्छे रहेंगे और फिर उकताए हुए बच्चे होते हैं न, उन बच्चों को क्या? यह संताप, चिढ़ और बाहर का कुसंग। तो कुचिरत्र के ही विचार आते रहेंगे। ऐसे समय में अपना जो यह है न, वह ठंडक देगा। तो उन विचारों को उड़ा देगा। बचाने का साधन है यह बहुत सुंदर है।

होता है वातावरण पवित्र, आरती से

यह अपनी आरती, यह तो एक मुख्य साधन है। उनमें जो जलन है न, वह इससे शांत होती है। इसलिए फिर बाहर जाने के लिए परेशान नहीं करते। फिर उनका इन विषयों की तरफ चित्त नहीं जाता। यानी बच्चे रेग्यूलर और समझदार हो जाते हैं। और अगले दिन बाहर घूमने के लिए जाने के बजाय कहेगा कि, 'आप वह गाइए, वह गाइए।' घूमने जाना रहने देगा, संस्कार तो पड़ेंगे और बड़ों को क्लेश नहीं होगा। घर में यदि एक ही क्लेश हो जाए तो पूरा वातावरण बिगड़ जाता है। लेकिन यह आरती उसकी प्रतिपक्षी है। उससे क्या होता है? कि वातावरण सुधर जाता है, शुद्ध-पवित्र हो जाता है।

बरसे, नित कृपा-आशिष देवलोक के

इसलिए कुछ एक ने घर में ऐसा नक्की किया हुआ है, कि हम लोग शाम को खाना खाने के बाद, सभी बच्चे, पत्नी और पति सब साथ में गाएँगे। अपनी 'विधि, आरती, असीम जय-जयकार हो' वगैरह। कुछ लोग तो दो बार करते हैं। सुबह और शाम।

प्रश्नकर्ता : दादा हमारे सभी घरवाले तो करते हैं आरती-विधि रोज़।

दादाश्री : पाँच-सात लाख लोग गाने लग जाएँ तो बहुत हो गया। बाद में उनके बच्चे भी गाएँगे। वे आरती-विधि वगैरह सब करेंगे। इससे दिनभर घर के सभी लोग परमानंद में रहेंगे!

यह आरती सही ढंग से बोली जाए न तो घर पर दादा हाज़िर हो जाते हैं और दादा के हाज़िर होने से, सभी देवी-देवता हाज़िर हो जाते हैं और सभी

मोरबी त्रिमंदिर प्राणप्रतिष्ठा महोत्सव की झलकियाँ : दि. 24 फरवरी 2013

सत्संग-ज्ञानविधि

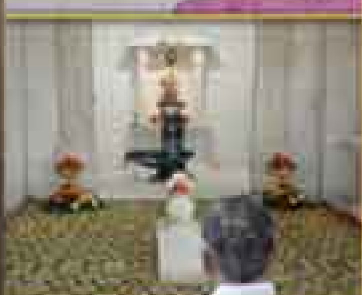

तीनों मुख्य तथा अन्य भगवंतों की प्राणप्रतिष्ठा करते पूज्यश्री

पोडियम से आशीर्वचन देते पूज्यश्री

भक्ति

लहराता हुआ ध्वज

दादा भगवान को पुष्पार्पण

महात्माओं का अनूठा आत्मोल्लास

स्वामी प्रक्षाल

स्वामी पूजन

महावीर भगवान

पार्श्वनाथ भगवान

ऋषभदेव भगवान

अंबा माताजी
खोडियार माँ
महात्माओं की खचाखच हाजिरी से भरा हुआ सभामंडप
श्री कृष्ण पूजन
श्री शिव पूजन
हनुमान जी

साईं बाबा

पद्मावती देवी

पद्मनाभ प्रभु

झिलमिलाता त्रिमंदिर

मंदिर में भक्ति

मोरबी त्रिमंदिर के द्वार खुलते हुए... : दि. 25 फरवरी 2013

महात्माओं के संग आरती करते पूज्यश्री

देवी-देवताओं की कृपा रहती है। आरती तो, यदि घर पर नियमित गाई जाए और उसके लिए कोई टाइम निश्चित कर लो तो बहुत ही अच्छा है।

आरती-विधि, वह बहुत बड़ा साधन, अक्रम का

यह अपनी आरती, अज्ञानियों को भी ज़बरदस्त ठंडक देनेवाली है। इसलिए आरती का नियम रख लेना चाहिए। यहाँ जिस प्रकार से गाते हैं न उसी प्रकार से दिन में एक बार तो अवश्य आरती करनी चाहिए।

प्रश्नकर्ता : दादा, अब हम आरती-विधि सब करते हैं तब दूसरे सभी लोग ऐसा कहते हैं कि, आप तो अक्रम कहते हो, लेकिन विधि करते हो, आरती करते हो। नमस्कार विधि और यह सब बोलते हैं, तो क्या यह क्रम नहीं है? क्रमिक का ही हुआ न?

दादाश्री : ये अक्रम के साधन है। घर में आरती करें इतना तो साधन रखना चाहिए न? न तो शास्त्र पढ़ने को कहा, न ही उपवास करने को कहा, न ही तप करने को कहा है, तब फिर कोई साधन तो होना चाहिए न? क्रम का मतलब तो सब कम करते करते आगे बढ़ना।

प्रश्नकर्ता : हाँ, वह तो ऐसी चर्चा होती है तब हम ऐसा कहते हैं लेकिन लोग मानते नहीं। वे कहते हैं, 'तो फिर आप हमारे जैसा ही कर रहे हो न?'

दादाश्री : लेकिन, उन्हें ऐसा समझ में आता नहीं है न! आप ये जो विधियाँ वगैरह करते हो या फिर खाते-पीते हो, जो कुछ भी करते हो, उसके लिए मैं कहता हूँ कि 'वह क्रम नहीं है।'

क्रम यानी कि आगे की स्टडी। जो अभी हो, जहाँ अटके हुए हों, वहाँ से आगे स्टेप बाय स्टेप जाना। अर्थात् पहले बात जानी जाती है, उसके बाद श्रद्धा बैठती है, बाद में आचरण में आता है। श्रद्धा बैठे, ऐसे सीढ़ी दर सीढ़ी होते, होते, होते, 'मैं शुद्धात्मा हूँ' उस स्थिति में आए, वह क्रमिक।

वह तो उनके लिए क्रमिक में ऐसे लागू होता है। और यह तो करोड़ों जन्मों में भी प्राप्त नहीं हो ऐसी चीज़ है यह अक्रम तो।

इस आरती की क़ीमत ही अनेरी

ये ज्ञानीपुरष की आरती, वह तो गज़ब की आरती है। उस वस्तु की क़ीमत तो ज़ौहरी के हाथ में आए तभी होती है। ऐसी आरती जो उसने दुनिया में कभी भी किसीने देखी नहीं हो ऐसी आरती होती है।

पूरा ब्रह्मांड प्रकाशमय हो जाए ऐसी यह आरती हो रही है। अंत तक केवलज्ञानी देखें, तीर्थंकर देखें ऐसी यह आरती होती है। वहाँ रहे रहे देख सके, ऐसी यह आरती होती है। उनका लक्ष्य बैठने के बाद भी उनसे लाभ नहीं उठाएँ तो फिर क्या होगा?

यह आरती अनंत जन्मों के रोगों का नाश करनेवाली, ऐसी गज़ब की आरती है!

हमारी आरती से तमाम प्रकार की मिट्टी घुलती जाती है। लेकिन जो नहीं घुले तो समझना कि यह मिट्टी के जाति का नहीं है। काला पत्थर है, ऐसा समझना।

प्रश्नकर्ता : यह आरती और जो विधि होती है, वह दूसरे जन्म में... एक जन्म का अनुसंधान है?

दादाश्री : अगले जन्म के लिए, उसका संधान करवा देता हूँ कि आपको यह सारा सत्संग प्राप्त हो। अभी से ही सारी व्यवस्था हो गई है। क्योंकि एक या किसी के दो जन्म, किसी के तीन हो सकते हैं, किसी का एक ही बाकी हो और किसी के दस जन्म भी हो सकते हैं। लोभी या लालची व्यक्ति होते हैं न!

पिछले नुकसान चुक जाएँ, इस कमाई से

ये मंत्र और आरती, यदि पौने घंटे तक हुए न, तो एक गुणस्थानक पूरा हो जाए। इन गुणस्थानकों में भजन अलग चीज़ है और यह अलग चीज़ है। भजन भी फायदेमंद वस्तु है। बहुत फायदेमंद है।

हर एक चीज़ फायदेमंद ही है लेकिन पिछला घाटा भी बेहद है इसलिए मुनाफा नहीं बढ़ता है।

देखिए न, अब तक आपका मुनाफा नहीं बढ़ा है न! अभी तक नहीं बढ़ा? बैंक में जमा नहीं होता?

प्रश्नकर्ता : जितना होना चाहिए, उतना मुनाफा नहीं है।

दादाश्री : हाँ, बैंक में जमा नहीं होता, पिछले घाटे की भरपाई में चला जाता है सब। चंदूभाई के पहले के घाटा नहीं हैं क्या?

प्रश्नकर्ता : आप तो सब जानते ही हैं, मुझे पता नहीं है।

दादाश्री : नहीं, लेकिन अब वह मुनाफा बढ़ेगा। जमा हो रहा है?

प्रश्नकर्ता : लगता है कि हो रहा है अब।

दादाश्री : अब हो रहा है न? तो फिर ठीक है।

यदि अंदर द्रव्य परिणाम अत्यंत अच्छा हो न तो एक ही घंटे की ज़रूरत है आपको। लेकिन ज्ञानीपुरुष क्या कोई साधारण सब्ज़ी-भाज़ी है कि हर रोज़ बार-बार दर्शन करो? एक ही घंटे की ज़रूरत है। लेकिन ये सारा माल...सारा, यह जो कलियुग है न, उसी के कारण ऐसा ही हो गया है सारा।

कुछ लेना-देना नहीं और दिन-भर बिल्कुल *अजंपा* (बेचैनी) ही करता रहता है। इससे सबकुछ.... पूरा सब छिन्न-भिन्न हो गया है वर्ना तो इन घाटों को खत्म करने के लिए एक ही घंटे की ज़रूरत है। ज्ञानीपुरुष के समय की ज़्यादा ज़रूरत नहीं होती। सिर्फ हाथ लगाएँ तो भी बहुत हो गया। लेकिन देखो न कितना सारा घाटा है! घाटा पूरा होगा तभी तो मुनाफा दिखेगा न? इस दीपक में तो मुनाफा दिखता है न? देखो न चमक उठा है न? साथ ही यदि व्यवहार भी होते, तो काम ही हो जाएगा न!

जैसे भाव वैसी भजना

प्रश्नकर्ता : दादा, आपकी यह फिलोसॉफी (तत्वज्ञान) और टीचिंग सब अच्छा लगता है, जो आप सिखाते हैं न, वह ज्ञान अच्छा लगता है। लेकिन यह 'दादा भगवान के असीम जय-जयकार' बोलना अच्छा नहीं लगता, तो क्या करूँ? खुद का 'दादा भगवान' के लिए कुछ नहीं है लेकिन यह 'दादा भगवान के असीम जय-जयकार' गाया जाना, वह काम का नहीं लगता। तो वह क्या है, दादा?

दादाश्री : वह बंद रखना आप। जो आपको नापसंद हो वह बंद रखना। लोगों को तो बहुत पसंद है लेकिन अब आपके अंदर का माल कच्चा हो, अलग प्रकार का हो, तो क्या हो सकता है? कचरा भरकर लाए हो, तो क्या हो सकता है?

प्रश्नकर्ता : दादा, आपका ज्ञान मुझे पसंद है। आप जो ज्ञान देते हो टीचिंग करवाते हो, आज्ञा आपकी पसंद है, लेकिन....

दादाश्री : नहीं, लेकिन यह ऐसा है न कि चोखा नहीं है। सबको अच्छा लगे, वह आपको भी अच्छा लगे तब जानो कि यह चोखा माल है। और ऐसा नहीं अच्छा लगे, खुद एक्सेप्शन अपवाद, तब समजना कि यह शुद्ध माल नहीं है। माल प्योर नहीं है कम्प्लीट, दाग़वाला माल है।

शुद्धात्मा भाव से करें यह आरती

प्रश्नकर्ता : हम सभी आरती करते हैं, उस समय हम सभी को कैसा भाव रखना चाहिए?

दादाश्री : मैंने जो दिया है, यथारूप उसी भाव में रहना चाहिए। शुद्धात्मा भाव में ही, अन्य किसी में नहीं। होम डिपार्टमेन्ट में (आत्म विभाग), फॉरिन डिपार्टमेन्ट (अनात्म विभाग) में नहीं। ये चंदूभाई दिन-भर फॉरिन में रहते थे। अब जाकर दिखा कि यह फॉरिन का है। आपका होम तो यह है। उस होम में गए ही नहीं थे न! होम में गए, तब

पता चला कि होम तो मेरा यह है। अभी तक का फॉरिन में गया सभी। आपको समझ में आया। होम और फॉरिन? फॉरिन को होम मानकर चलते थे। इस तरह क्या दिन बदलेंगे आपके?

प्रश्नकर्ता : आरती में मुझे लगा कि यदि आरती हम ठीक से ध्यानपूर्वक......

दादाश्री : तब तो बिल्कुल जमा ही हो जाता है। बहुत-बहुत कमाई होती है।

प्रश्नकर्ता : एक दैवीय भाव उत्पन्न होता है।

दादाश्री : जब आप दादा की आरती करते हैं उस समय ऐसा भाव रहता ही है कि 'फिर से करें।' और जब आरती नहीं कर रहे हों, उस समय आप ऐसा सेट करो कि 'फिर से ऐसा करें', तभी ऐसा होगा। और यदि सेटिंग नहीं की तो रह भी जाए। आरती के समय तो यों ही बीज पड़ जाते हैं।

आफरीन होने जैसा है इस अलौकिकता पर

यह जो आरती हुई, वैसी ज़िदगी में एक बार भी मिले तो उसे धन्यभाग मानते हैं। लेकिन यह तो रोज़ आरती मिलती है इसलिए आदि हो जाता है। इसकी अलौकिकता यदि नहीं चूके और जागृति रखे, तो क़ीमत समझ में आएगी, ऐसा है। यह तो रुपये के भाव की चाय एक बार भी पी हो तो याद रहती है, लेकिन यदि रोज़ पीने को मिले, तो उसकी क़ीमत समझ में नहीं आती। आदि हो जाते हैं। मनुष्य का स्वभाव कैसा है, आदि हो जाते हैं।

खिले आतम पुष्प, आरती में

प्रश्नकर्ता : आनंद करवाए, ऐसी आरती है।

दादाश्री : और अपने मन को भी बहुत आनंद देती है। मनोरंजन तो बहुत देखे हैं, लेकिन आत्मरंजन देखना चाहिए न? यह आत्मरंजन कहलाता है। यहाँ अपने दिल को ठंडक होती है।

यह आरती ऐसी है कि जब आरती उतारे न तो फिर आत्मा खिलता है उसमें पत्तियाँ आती हैं। जिस प्रकार पुष्प खिलते हैं न, उसी प्रकार खिलता है। पहले गुलाब कली के रूप में तो होता ही है, लेकिन आरती करते हैं न, तब गुलाब की एक पत्ती खिलती है। अब उसमें इतनी पच्चीस-पचास पत्तियाँ खिलती हैं, उसका आनंद रहता है। और यहाँ आकर भी जो लोग चले जाते हैं, तो फिर बाद में पंखुँड़ियाँ नहीं खिलतीं।

कुछ एक को तो ऐसा कहता हूँ कि 'भाई, आपसे यदि ज़्यादा नहीं आया जाए, तो आरती के टाइम पर आ जाना।' क्योंकि इससे पत्तियाँ खुलती हैं। अपने यहाँ की जो ये सब क्रियाएँ हैं न, वे सब खिलने के लिए हैं। इसीलिए हम दिन भर बैठे रहते हैं न! हमारी तो खिल चुकी हैं, फिर भी बैठे रहते हैं, उसीसे सब की भी खिलती हैं न!

प्रकट के लक्ष्य से प्रकटे खुद का ही आत्मा

सत्पुरुष, वे ही खुद का आत्मा हैं। कभी भी खुद के आत्मा की आरती उतारी ही नहीं न, वर्ना तो काम ही हो जाए न!

अत: यह आरती अलग प्रकार की है। अब सिर्फ इन्हें, इन प्रकट को लक्ष्य में रखकर बोलते हैं, इसलिए आपका खिलता जाता है।

जो प्रकट को लागू नहीं होता तो वह शब्द इन्टरेस्टिंग (मन लगानेवाला) नहीं होगा। गाते रहें बस उतना ही, किन्तु इन्टरेस्ट नहीं आएगा। यहाँ पर तो बच्चे आम छोड़ते ही नहीं न! मैंने कहा, 'फेंक दे आम।' तो कहता है, 'उंहुं, नहीं फेंकना चाहिए।' अर्थात् प्रकट हों, प्रकट और प्योरिटी हो तब इन्टरेस्ट आता है, नहीं तो क्या इन्टरेस्ट आता था? भले ही गाते रहो न पूरे दिन।

इसलिए इसकी बात ही अलग है। यह तो पूरे दिन में अगर दो बार भी हो जाए न, तो भी बहुत हो गया। आप जब आरती करते हैं उस वक्त भी बोलते

तो हैं न! ऐसा करने से सभी शक्तियाँ बढ़ती जाती हैं। आत्मशक्ति को तो बढ़ना नहीं होता, वह तो प्रकट होती है बढ़ोतरी किसमें होती है कि जिसमें जो शक्ति कम है, वह बढ़ती है। आत्मशक्ति नहीं बढ़ती, वह तो प्रकट होती है। वास्तव में, है तो सही न!

प्रकटपना खुद का, आरती-सत्संग द्वारा

आत्मा जागृत तो हुआ लेकिन अब संपूर्ण होना, वह ज्ञानीपुरुष की मौजूदगी में होता रहेगा। जब तक खुद के आत्मा का स्पष्टवेदन नहीं होता, तब तक ज्ञानीपुरुष, वे ही खुद का आत्मा हैं।

जब तक हम शुद्धात्मा हैं वह ख्याल में रहता है। शुद्धात्मा का ख्याल है, उससे अपने अंदर प्रकटपन बढ़ता जाता है। यह जो अपनी दिनोंदिन आरती-विधि है न, वह सब खुद का ही प्रकट करने के लिए हैं। यहाँ जो आरती, सत्संग वगैरह होते हैं, वे सभी अपने खुद के लिए ही है।

सुननेवाला भी खुद अपना सत्संग करता है और बोलनेवाला भी खुद अपना सत्संग करता है। दादा का सत्संग कब कहलाता है? अब यदि कोई नया व्यक्ति यहाँ पर आए न, तो उसके लिए यह सत्संग दादा का कहलता है। जिसे यहाँ प्रकट सत्ता दी गई है, तो वे सभी खुद का ही कर रहे हैं। यह विज्ञान इस प्रकार का है कि किसी भी व्यक्ति को औरों के लिए करने की ज़रूरत नहीं है। अपने आप ही खुद, खुद का ही कर रहे हैं।

खुद, अपनी भक्ति है यह सारी। इसमें औरों का कुछ है ही नहीं। आप दादा का जो-जो करोगे वह सब आपका ही है। आरती उतारोगे वह भी आपकी, दादा का नाम गाओगे, वह भी आपका। सबकुछ आपका है। आपका व्यक्तित्व विकसित हो रहा है।

आत्मयज्ञ - सीधा प्रज्ञा द्वारा

प्रश्नकर्ता : खुद, अपनी ही आरती उतारते हैं, ऐसा क्यों कहा?

दादाश्री : यह मार्ग कैसा है? 'अक्रम विज्ञान' है। यानी खुद अपना ही कर रहा है। यहाँ जो आरती उतरती है न, तो वह खुद अपनी ही आरती उतार रहा है। यह बड़े गज़ब की बात है, आश्चर्य है! यहाँ पर जो हमारी आरती उतारते हैं, यहाँ जितने भी लोग हैं वे सभी खुद की ही आरती उतार रहे हैं। खुद के आत्मा की ही आरती उतार रहे हैं। इन प्रकट के माध्यम से खुद का ही प्रकट करना है। अपना यह सूक्ष्मतम संयोग है, जबकि पूरा जगत् स्थूल में पड़ा हुआ है। पूरा जगत् स्थूल क्रियाओं में है। ये सब यज्ञ वगैरह सभी क्रियाएँ योग-वोग सभी, ये मानसिक भी सारा स्थूल कहलाता है। लेकिन यह स्थूल से भी आगे का पद कहलाता है। यह सूक्ष्म तक ले जाएगा। और सूक्ष्मतर और सूक्ष्मतम तो जगत् ने देखा ही नहीं है, सुना ही नहीं है। अत: अपना यह सूक्ष्मतम प्रयोग है, और अंतिम में अंतिम यज्ञ कहलाता है यह। जिस यज्ञ में मन-वचन-काया की कोई क्रिया नहीं होती। यह तो आत्मा का यज्ञ सीधा प्रज्ञा के माध्यम से उत्पन्न हुआ है। इसलिए यह जो जो कर रहे हो न, वह सब खुद के आत्मा का ही हो रहा है।

यहाँ सब होता है, खुद का ही

दादाजी का इसमें कुछ भी नहीं है। हर एक का अपना-अपना प्रकट हो, उसके लिए है। जो-जो यहाँ पर जो कुछ भी क्रियाएँ हैं, वे सारी 'खुद' खुद की ही क्रियाएँ कर रहे हैं। 'दादा भगवान' यानी वे भी उनके अंदर जो हैं, वही भगवान, उन्हीं को प्रकट कर रहे हैं। अपने यहाँ जो आरती है, वह खुद की आरती है। अपने यहाँ जो पद गाते हैं, वह खुद की ही कीर्तन-भक्ति है। अपने यहाँ खुद के सिवा 'रिलेटिव' चीज़ है ही नहीं। यानी यह सब अलग प्रकार का है।

प्रश्नकर्ता : हम चौबीसों घंटे आपका नाम लेकर बोलें तो पाप नहीं बँधता है न?

दादाश्री : दादा का नाम लेना, वह तो खुद

अपने 'शुद्धात्मा' का नाम लेने के बराबर है। ये जो पद गाते हैं वह खुद के ही शुद्धात्मा का कीर्तन करने के बराबर है। यहाँ सबकुछ अपना खुद का है। यह आरती भी खुद अपनी है। हमारा कुछ भी नहीं। हम आपके हैं न! जिसे जितना करना आया उतना उसका काम हो जाएगा।

दादा की कीर्तन-भक्ति, वह खुद की है

जिन्हें यह पता नहीं है कि हम यहाँ अपनी खुद की कीर्तन-भक्ति करते हैं, उन्हें तो फिर नुकसान हो जाएगा न? यह जानने के बाद नुकसान नहीं होने दें। यहाँ जो भक्ति करते हैं, वह मेरे लिए है 'ए.एम.पटेल' के लिए नहीं है। यह तो 'दादा भगवान' के लिए हैं। और 'दादा' तो सभी में बैठे हुए हैं। सिर्फ मुझ अकेले में ही नहीं बैठे हैं। वे आपके अंदर भी बैठे हैं। यह उन्हीं की भक्ति है। आरती वगैरह सब उन्हीं का है और उसीसे सभी को आनंद आता है। आप सभी के साथ मैं भी अंदर बैठे हुए 'दादा' को नमस्कार करता हूँ।

प्रश्नकर्ता : उस घड़ी सभी आनंद में आ जाते हैं, उसका क्या कारण है?

दादाश्री : क्योंकि ये 'दादा' यदि देहधारी रूप में होते न, तो मन में ऐसा लगता कि ये खुद अपने लिए ही गाते रहते हैं। वास्तव में ऐसा नहीं है। श्रीकृष्ण भगवान ने गीता में इसी प्रकार गाया है लेकिन लोगों को समझ में नहीं आता न! 'तू' ही कृष्ण भगवान है। जब तक खुद के स्वरुप का भान नहीं हुआ हो, तब तक कैसे समझ में आएगा?

जब तक ज्ञान नहीं होता, तब तक उन्हें ऐसा लगता है कि मैं इस मूर्ति के ही चरण स्पर्श कर रहा हूँ, ये देहधारी हैं। लेकिन जिन्हें ज्ञान दिया गया हो.. आपको ये दिव्य-चक्षु दिए हैं तो फिर आप किसके दर्शन करते हो? अमूर्त के दर्शन करते हो। दिव्यचक्षु होंगे तो अमूर्त के दर्शन होंगे। आप जिनके दर्शन कर रहे हो, वह अपके ही आत्मा के दर्शन कर रहे हो।

ज्ञानीपुरुष का परम विनय करते हैं, वह भी अपना खुद के आत्मा का विनय है। आत्मा उतना प्रकट होता है।

अभेद भाव से, अभेद भक्ति

यह अक्रम विज्ञान है ही ऐसा कि हर एक का व्यक्तित्व खिल रहा है। अभेद भाववाला है यह। अभेद भाव क्यों? तब कहते हैं, मूल 'दादा' में बुद्धि ही नहीं है। इसलिए अबुध हैं और अबुध हैं इसी वजह से अभेदता का वातावरण उत्पन्न होता है। बुद्धि भेद डलवाती है। बुद्धि हमेशा भेद डालती है। यह हमारा और वह आपका, और यह फलाँ। दादा में भेद बुद्धि ही नहीं है न! यहाँ अभेद स्वरूप में बैठते हैं, उठते हैं, खाते हैं, पीते हैं अभेद स्वरूप। थोड़ी भी भेद बुद्धि नहीं, इस प्रकार का दादा का स्वरूप है। यहाँ आपको सत्युग जैसा लगेगा और उसका तो पूरे वातावरण पर असर रहता है, निरंतर। कभी भी जुदाई नहीं दिखती। हमारे यहाँ पंद्रह सौ-पंद्रह सौ लोग इकट्ठे हुए होंगे, लेकिन कभी भी जुदाई नहीं दिखाई दी। आश्चर्य है न!

प्रश्नकर्ता : 'मैं ही दादा में व दादा ही मुझ में।'

दादाश्री : यह अभेदता है। दादा आपके अंदर बैठे हुए हैं। वे भी दादा हैं और फिर ये भी दादा। यह भक्ति दादा की होती रहती है निरंतर।

अव्यक्त व्यक्त होता है, अक्रम द्वारा

अब यहाँ पर यह जो रास्ता है न, यह अक्रम विज्ञान, वह क्या कहना चाहता है कि खुद, खुद की सँभालो। और 'दादा भगवान को मैं नमस्कार करता हूँ' यह जितनी बार बोलते हो, वह आपके अंदरवाले दादा के लिए ही बोलते हो। जगत् में जो सब बोला जाता है न, वह जो बोला जाता है न, उसमें क्या होता है कि मुझे आपका नाम लेना पड़ता है। अरे भई, मुझे किसलिए आपका नाम लेना पड़े?

यह तो, दादा का और उसका, एक ही है। यहाँ आरती उतारते हो, वह आपके अंदरवाले दादा की ही आरती उतारते हो। ये बात आपको ही स्पर्श करती है। वैसे लोगों को दिखने में ऐसा लगता है कि यह दादा की भक्ति है। नहीं, ऐसा नहीं है, यह हर एक जीव को स्पर्श करती है। यह व्यक्त का मार्ग है। अपना, खुद का ही व्यक्त (प्रकट हो) हो रहा है, निरंतर व्यक्त हो रहा है।

रियल की भक्ति, स्पर्श करे रियल को

अपना यह रियल मार्ग है। उसने दादा के चरण छूए यानी खुद के आत्मा के ही पैर छू रहा है, अत: खुद उस रूप हुआ। यह सब खुद के लिए ही है। हर एक क्रिया खुद के लिए है। रिलेटिव में ऐसा दिखता है कि दादा को मैं फूल चढ़ा रहा हूँ, दादा के चरण स्पर्श कर रहा हूँ। लेकिन रियल में खुद, खुद के ही चरण स्पर्श कर रहा है। खुद अपने आप को ही फूल चढ़ा रहा है।

उन्हें एक फूल चढ़ाएँ तो सौ वापस मिलते हैं। क्योंकि वे स्वीकार नहीं करते, वीतराग हैं। अहो! पूरे ब्रह्मांड का नाथ अंदर है। मैं भी इसी तरह नमस्कार करता हूँ। क्या-क्या नहीं देना चाहते हम उन्हें? लेकिन उन्हें कुछ चाहिए ही नहीं। अपने लिए ही करते हैं, यह सब। खुद, खुद को ही व्यक्त कर रहा है। खुद, खुद को ही भजता है और अपना व्यक्तित्व व्यक्त करता है, मुझे कोई नहीं भजता। मैं तो इन सभी का शिष्य हूँ।

'दादा', संगमेश्वर भगवान

प्रश्नकर्ता : आरती में 'संगमेश्वर भगवान' शब्द आता है, वह समझाइए।

दादाश्री : अभी, फिलहाल इस ब्रह्मांड में यदि कई संगमेश्वर भगवान हैं, तो सिर्फ 'दादा' ही है। 'ये' जो अंदर प्रकट हुए हैं, वे 'संगमेश्वर भगवान' हैं। सभी धर्मों का संगम है यहाँ पर। इसीलिए तो हम कहते हैं जैनों के हम महावीर हैं, वैष्णवों के कृष्ण हैं, स्वामीनारायण के सहजानंद हैं, क्रिश्चनों के क्राइस्ट हैं, पारसियों के ज़रथ्रुस्ट हैं, मुस्लिमों के खुदा हैं, जिसे जो चाहिए, वह ले जाओ। हम 'संगमेश्वर भगवान' हैं। तू तेरा काम निकाल ले। हर एक का जितनी उसकी समझ है उतना काम निकलेगा। यह तो आश्चर्य है, बड़े से बड़ा। इस दुनिया में सुना नहीं हो। यह तो अद्भुत मार्ग है, अक्रम विज्ञान!

ज्ञानी कृपा से प्रकट हुआ, अयाचकपन

क्या अभी आपने छोड़ा है कुछ? कोई परिग्रह छोड़े हैं क्या?

प्रश्नकर्ता : थोड़े से, दादा।

दादाश्री : क्या पत्नी-बच्चे सभी?

प्रश्नकर्ता : पत्नी-बच्चों को नहीं छोड़ा है।

दादाश्री : तब वही तो छोड़ने का है न? तीखा नहीं खाया, या मीठा नहीं खाया, उसका क्या? मीनींगलेस बातें हैं। छोड़ दिया, छोड़ दिया यह सब छोड़ना ही है। पत्नी, बच्चे, संसार सभी को छोड़ना है। और यहाँ पर छोड़ने की ज़रूरत ही नहीं है, बगैर छोड़े काम हो जाता है।

प्रश्नकर्ता : दादा, पहले पढ़ा था, वह अनुभव में आया कि अनंतकाल का याचकपना वह निवृत्त हो गया।

दादाश्री : हाँ, अयाचकपना।

प्रश्नकर्ता : और अयाचकपना प्रकट हुआ।

दादाश्री : हाँ, हाँ, ऐसा।

प्रश्नकर्ता : ऐसे तरण तारणहार मिल गए।

अजागृति का करें प्रतिक्रमण

प्रश्नकर्ता : मैं जब दादा का नाम लेता हूँ या आरती करता हूँ, तब भी मन कहीं और भटकता रहता है। तब फिर आरती में कुछ अलग ही गाता

हूँ। बाद में अलग ही पंक्तियाँ गाने लगता हूँ। फिर विचार आते हैं, उसमें तन्मयाकार हो जाता हूँ। थोड़ी देर बाद, वापस इसमें आ जाता हूँ।

दादाश्री : ऐसा है न, उस दिन प्रतिक्रमण करना। विचार आए तो कोई बात नहीं। विचार आए तब आप 'चंदूलाल' को देख सकते हो कि 'चंदूलाल' को विचार आ रहे हैं। अगर यह सब देख सकते हो तो आप और वह दोनों जुदा ही हैं। लेकिन उस वक्त कच्चापन रह जाता है।

प्रश्नकर्ता : जागृति ही नहीं रहती उस वक्त।

दादाश्री : तो उसका प्रतिक्रमण कर लेना चाहिए कि यह जागृति नहीं रही, उसके लिए प्रतिक्रमण कर रहा हूँ। दादा भगवान क्षमा करना।

शुद्धात्मा होकर, देखो पुद्‌गल को

प्रश्नकर्ता : लेकिन दादा, इस चंदूभाई का मन और चित्त आरती में बहुत घूमने जाता है। आरती के वक्त मन-चित्त वगैरह दादा में रहें, उसके लिए क्या करूँ ?

दादाश्री : कुछ नहीं करना है। ऐसा है न कि ये मन-चित्त वगैरह जो जो भी है चंदूभाई का, वह तो वैसे का वैसा ही है। आप अलग हो गए हो इन सभी से। आप शुद्धात्मा के रूप में अलग थे लेकिन अंदर घोटाला था। जो कुछ भी हो रहा था, उसे आप कहते थे कि 'मैं कर रहा हूँ' और ज़िम्मेदारी उठा रहे थे। आप अलग हो गए हो, इसलिए आपको देखा करना है कि 'चंदूभाई' के मन-बुद्धि-चित्त क्या कर रहे हैं! इन सभी को देखना है। ऐसा कब तक चलेगा? जब तक भरा हुआ माल होगा तब तक! फिर तो मन भी निरंतर आप में (आत्मा में) ही रहेगा। अभी तक यह चित्त ऐसा है। ऐसा थोड़े समय तक होगा, फिर बाद में यह सब निकल जाएगा। फिर कहाँ जाएगा वह? यह तो खाली होता हुआ माल है। यह पुद्‌गल है और आप शुद्धात्मा।

ज़रूरत है जागृति की, एकाग्रता की नहीं

प्रश्नकर्ता : दादा, अब एक प्रश्न यह उठता है कि जब दादा हाज़िर नहीं होते, तब (उनका) फोटो रखकर आरती करते हैं। उस समय कोई एक व्यक्ति आरती करता है, फिर दूसरा, फिर तीसरा लेता है। इस प्राकर आरती को एक-दूसरे को देने में और जाने में ही हमारा मन रह जाता है और ठीक तरह से एकाग्रता से आरती नहीं हो पाती, तो तब कैसे करना चाहिए?

दादाश्री : एकाग्र होकर करने की ज़रूरत नहीं है। एकाग्रता से करने पर आप एकाग्र हो जाएँगे, तो आत्मा विस्मृत हो जाएगा।

प्रश्नकर्ता : नहीं, एकाग्रता नहीं, जागृति से, दादा। आरती जागृति से नहीं हो पाती।

दादाश्री : मतलब 'मैं आत्मा हूँ' यह लक्ष्य में होता ही है और आरती करनेवाले को जानो। यदि आरती करनेवाले को जानो तो बहुत हो गया। कौन कर रहा है यह?

प्रश्नकर्ता : दादा, आपने कहा है न, कि जब आरती करें या 'दादा भगवान के असीम जय-जयकार' बोलें उस वक्त यों एक-एक शब्द पढ़ना चाहिए।

दादाश्री : 'दादा भगवान के असीम जय-जयकार हो' पढ़ा जाए तो ठीक है, लेकिन नहीं पढ़ा जाए, ऐसा नहीं हो रहा हो, उतनी शक्ति नहीं हो तो उसमें हर्ज नहीं है।

प्रश्नकर्ता : लेकिन दादा, वह फिर एकदम मिकेनिकल नहीं हो जाना चाहिए न?

दादाश्री : मिकेनिकल होगा ही नहीं। यदि एकाग्रता नहीं रह पाएँ तो क्या करोगे?

प्रश्नकर्ता : ज़ोर से बोलें और खुद सुनने का प्रयत्न करें।

दादाश्री : हाँ, वह बहुत उपयोगी है।

खुद अपना-अपना धर्म बजाएँ, वही उपयोग

प्रश्नकर्ता : हम ये आरती करते हैं उस वक्त आँखें तो बंद होती है फिर भी आरती चल रही हो और आपकी जो आरती उतर रही है वैसा इन बंद आँखों से जो दिखाई दे या सीमंधर स्वामी का दिखाई दे या तो फिर आपने कहा वैसा कि एक-एक अक्षर पढ़ने में आए, तो वह कैसा उपयोग कहलाता है?

दादाश्री : यह सब तो अज्ञानी भी करते हैं। आरती करने जाएँ न तो बंद आखों से दिखाई देता है सब, दीया जला रहा है वह भी। उपयोग में तो जैसा बताया है वैसा होना चाहिए। कर्ता जुदा और ज्ञाता जुदा। कर्ता उसके स्वभाव में है या नहीं या फिर कर्ता अजागृति में है वह भी फिर देखना है। यह दीपक जो है, वह अपना उपयोग रखे और उस पर आत्मा खुद का उपयोग रखे। दोनों एक साथ हो तब उपयोग में रहा कहलाएगा।

आत्मा, आत्मा का काम करे और दीपक, दीपक का काम करे। दीपक का मन, मन का काम करे। सभी अपने-अपने धर्म निभाएँ, वही उपयोग कहलाता है।

उपयोगवाले को कुछ भी बाधक नहीं है। ऐसा नहीं होना चाहिए और वैसा नहीं होना चाहिए। वह तो रिलेटिव ज्ञान है। वह उपयोग नहीं है।

अनन्यता पहुँचाएगी निरालंब के स्टेशन पर

प्रश्नकर्ता : अब, अपनी इस आरती में जो 'अनन्य शरणुं स्वीकारी...' आता है, तो वह 'अनन्य शरणुं' समझाइए।

दादाश्री : हाँ, हम जिसका अनन्य शरण लेते हैं, उसी रूप हो जाते हैं।

मात्र जिनकी आज्ञा का पालन करना है, उनमें आपकी अनन्यता आनी चाहिए। आपको और कुछ नहीं करना है। आपने तो अनन्यता की, कि फिर चल पड़ेगा। पानी के बीच में इतना सा पत्थर का टुकड़ा पड़ा हुआ है, उसे हटाने की ज़रूरत है। बस और कुछ नहीं, ताकि पानी तेज़ी से बहने लगे।

प्रश्नकर्ता : आपने कहा न कि 'जिनकी आज्ञा का पालन करना है, उनके प्रति अनन्यता होनी चाहिए', वह समझाइए।

दादाश्री : अनन्यता यानी जिसके द्वारा आपने भीतर पटंतर प्राप्त किया हो या फिर उनमें कुछ विशेषता का अनुभव किया हो तो फिर वहाँ अनन्यता रखनी चाहिए और यदि नहीं अनुभव हुआ होगा, तो वहाँ अनन्यता रहेगी ही। यानी जहाँ पर अनन्यता रखी न, उसके साथ ही यह पत्ती हटाने की ज़रूरत है। और आप जैसे व्यक्ति को तो देर ही नहीं लगेगी। आप जैसे को तो एक पत्ती हटाते ही, यदि एक ही बार पत्ती हटा दोगे न तो आपको अनुभव हो जाएगा।

प्रश्नकर्ता : दादा, अनन्य यानी एकता?

दादाश्री : अनन्य मतलब आपको यही एक सत्य लगे तो उस सत्य के अंत तक पार उतरकर, अंदर की गहराई तक उतर जाना चाहिए। उनकी अन्य किसी के साथ तुलना भी नहीं करनी चाहिए। तुलना करना आसान नहीं है। अनन्य यानी कृष्ण भगवान ने क्या कहा है, कि 'यदि हमारी अनन्य भक्ति हो जाए, तो हो गया बेड़ा पार।' लोग जिसे कृष्ण मानते हैं, वे कृष्ण नहीं हैं, वह तो भ्रांति है। कृष्ण भगवान तो एवर लास्टिंग (सनातन) हैं। ये फोटो, मूर्ति वगैरह सब भ्रांति है। भ्रांति के कृष्ण हैं ये। और सच्चे कृष्ण तो वे जो एवर लास्टिंग हैं। एवर लास्टिंग को अनन्य भक्ति कहते हैं।

स्पष्टवेदन होने पर आएगा हल

प्रश्नकर्ता : वह एवर लास्टिंग जो आप कहते हैं, भक्ति के लिए उनका स्वरूप कैसा होता है? एवर लास्टिंग अवलंबन के लिए कौन से स्वरूप का अवलंबन लें?

दादाश्री : स्वरूप का कुछ भी नहीं, 'मैं शुद्धात्मा हूँ' ऐसा भान रहे, वह एवर लास्टिंग है। वह भान तो रहा लेकिन वेदन नहीं रहा न! स्पष्टता! वेदन रहा, भान यानी वेदन, लेकिन स्पष्टवेदन! स्पष्ट.....स्पष्टता इसलिए कहा है, क्योंकि ये 'दादा', ये जो ज्ञानीपुरुष है, ये ही आपका आत्मा है, जब तक स्पष्टवेदन नहीं होता तब तक। और वे जो कहते हैं उसके अनुसार करो, ऐसा कहते हैं। और स्पष्टवेदन होने के बाद भीतरवाला जो कहे उसके अनुसार करना है। हमें तो, जो अंदर से कहा जाए उसी अनुसार करते हैं और उस कहनेवाले को हम भगवान कहते हैं। जो हमें हमारी भूल दिखलाता है, उन्हें हम भगवान कहते हैं। हमारी वैसी भूलें नहीं होतीं, यदि वैसी हों तो कोई *ऊपरी* (बॉस) रहेंगे। आप सभी की अभी कुछ भूलें होती हैं, इसलिए मैं ऊपरी के रूप में हूँ। लेकिन जब ये भूलें नहीं होंगी, तब मैं *ऊपरी* नहीं रहूँगा। तब स्पष्टवेदन हो चुका होगा। और फिर बाद में वे दिखाएँगे। फिर मेरी जगह पर वे आ जाएँगे। जब सारी भूलें खत्म हो जाएँगी, तब वे और आप एक ही....भूलें दिखलानेवाला और भूलें करनेवाला दोनों एक हो जाएँगे। हल तो लाना पड़ेगा या नहीं?

प्रश्नकर्ता : दादा, वही बात जब आप दोबारा कहते हैं न, तब उसका और ज़्यादा खुलासा होता है।

दादाश्री : वह तो उसका एक आवरण टूटता है, फिर बाद में दूसरा टूटता है। परतवाली चीज़ है न! सभी परतवाली हैं, जैसे-जैसे परत टूटती जाती हैं, वैसे-वैसे ज़्यादा समझ में आता जाता है। जब पूरा समझ में आ जाएगा, तब प्रकाश हो जाएगा, उसका।

जय सच्चिदानंद

पूज्य नीरूमाँ को देखिए टी.वी. चैनल पर...

भारत ✦ **'आस्था'** पर हर रोज़ रात १०-२० से १०-४० (हिन्दी में)
✦ **'डीडी-गिरनार'** पर हर रोज़ सुबह ७ से ७-३० (गुजराती में)
✦ **'अरिहंत'** पर हर रोज़ सुबह १० से १०-३०, दोपहर ३-३० से ४ (गुजराती में)
✦ **'डीडी-सप्तगिरि'** पर सोम से शुक्र सुबह ७-३० से ८ (तेलुगु में)

USA ✦ '**TV Asia**' पर सोम से शुक्र, सुबह ७-३० से ८ EST (गुजराती में)

USA-UK ✦ **'आस्था'** (डीश टीवी चेनल 849-युके, 648-युएसए) पर हर रोज़ सुबह ८ से ८-३० (गुजराती में)

✦ **समग्र विश्व में** (भारत के अलावा) **सोनी टीवी** पर सोम से शुक्र सुबह ७ से ७-३० (हिन्दी में)

पूज्य दीपकभाई को देखिए टी.वी. चैनल पर...

भारत ✦ **'साधना' पर हर रोज़ शाम ७-३० से ८ (हिन्दी में) - नया कार्यक्रम**
✦ **'दूरदर्शन' पर गुजरात में सोम से शुक्र दोपहर ३-३० से ४ 'जरा जुओ जागीने' - नया कार्यक्रम**
✦ **'डीडी-गिरनार'** पर हर रोज़ रात ९ से ९-३० - 'ज्ञानप्रकाश' (गुजराती में)
✦ **'डीडी-सह्याद्रि'** पर हर रोज़ सुबह ७-३० से ८ (मराठी में)

✦ **समग्र विश्व में** (भारत के अलावा) '**SAHARA ONE**' पर सोम से शुक्र - सुबह ९ से ९-३० **EST** (गुजराती में)

USA-UK ✦ **'आस्था'** (डीश टीवी चेनल 849-युके, 648-युएसए) पर हर रोज़ रात ९-३० से १० (गुजराती में)

मुख्य सेन्टरों के संपर्क : अडालज त्रिमंदिर: (079) 39830100, **अहमदाबाद:** (079) 27540408, **वडोदरा : (दादा मंदिर)** (0265) 2414142, **राजकोट त्रिमंदिर:** 9274111393, **भूज त्रिमंदिर:** (02832) 290123, **गोधरा त्रिमंदिर:** (02672) 262300, **मुंबई:** 9323528901, **दिल्ली:** 9310022350, **बैंगलूर:** 9590979099, **कोलकता:** 033-32933885, **यु.के.:** +44(0)330-111-DADA (3232), **यु.एस.ए.-केनेडा:** +1-877-505-DADA (3232), **ऑस्ट्रेलिया:** +61 421127947, **केन्या:** +254 722722063

दादाई जगकल्याण मिशन - सत्संग हाइलाईट्स

२५-२७ जनवरी : सुरत में आयोजित सत्संग-ज्ञानविधि कार्यक्रम में १५०० मुमुक्षुओं ने आत्मज्ञान प्राप्त किया। सेवार्थीओं के लिए आयोजित विशेष सत्संग में ६०० सेवार्थीओं ने हिस्सा लिया। पूरे कार्यक्रम के दौरान करीब ४००० से भी ज़्यादा महात्माओं की उपस्थिति पायी गई।

२९-३१ जनवरी : गोधरा में आयोजित सत्संग-ज्ञानविधि के कार्यक्रम में ७२५ मुमुक्षुओं ने आत्मज्ञान प्राप्त किया। सेवार्थीओं के लिए आयोजित विशेष सत्संग में २०० सेवार्थीओं ने भाग लिया। संपूर्ण कार्यक्रम के दौरान २५०० से अधिक महात्मा हाज़िर थे।

३१ जनवरी के दिन गोधरा त्रिमंदिर परिसर में पूज्यश्री के करकमलों द्वारा अंबा हेल्थ सेन्टर का उद्घाटन किया गया।

१-३ फरवरी : वडोदरा में आयोजित सत्संग-ज्ञानविधि के कार्यक्रम में ८५० मुमुक्षुओं ने आत्मज्ञान प्राप्त किया। Baby, Little और Young Mht के बच्चों तथा युवानों द्वारा पूज्यश्री का विशेष रूप से स्वागत किया गया। सेवार्थीओं के लिए आयोजित विशेष सत्संग में ३५० सेवार्थीओं ने हिस्सा लिया। संपूर्ण कार्यक्रम के दौरान करीब ४००० से अधिक महात्माओं की उपस्थिति पायी गई।

९-१० फरवरी : सुरेन्द्रनगर में आयोजित सत्संग-ज्ञानविधि के कार्यक्रम में १००० मुमुक्षुओं ने आत्मज्ञान प्राप्त किया। सेवार्थीओं के लिए आयोजित विशेष सत्संग में १५० सेवार्थीओं ने हिस्सा लिया। संपूर्ण कार्यक्रम के दौरान करीब २५०० से अधिक महात्माओं की उपस्थिति पायी गई।

१२-१३ फरवरी : जूनागढ़ में आयोजित सत्संग-ज्ञानविधि के कार्यक्रम में १८०० मुमुक्षुओं ने आत्मज्ञान प्राप्त किया। आसपास के बहुत सारे छोटे गाँवों के मुमुक्षुओं ने भी कार्यक्रम में उपस्थित रहकर आत्मज्ञान प्राप्त किया। विभिन्न संप्रदायों के संत भी पूज्यश्री से मिलने आए तथा उनके द्वारा हो रहे जगत् कल्याण के कार्य के प्रति अपना विशेष अहोभाव व्यक्त किया। सेवार्थीओं के लिए आयोजित विशेष सत्संग में ३०० सेवार्थीओं ने हिस्सा लिया। संपूर्ण कार्यक्रम में ३००० से अधिक महात्मा उपस्थित थे।

१५-१७ फरवरी : राजकोट में आयोजित सत्संग-ज्ञानविध के कार्यक्रम में २२०० मुमुक्षुओं ने आत्मज्ञान प्राप्त किया। Little Mht के बच्चों द्वारा पूज्यश्री का विशेष स्वागत किया गया। सेवार्थीओं के लिए आयोजित विशेष सत्संग में ३५० सेवार्थीओं ने हिस्सा लिया। इस पूरे कार्यक्रम में ७००० से अधिक महात्मा उपस्थित थे।

१८-१९ फरवरी: १२ वर्ष के लंबे अंतराल के बाद जेतपुर में आयोजित सत्संग-ज्ञानविधि के कार्यक्रम में २४०० मुमुक्षुओं ने आत्मज्ञान प्राप्त किया। आसपास के गाँवों से भी आत्मज्ञान प्राप्त करने बहुत सारे मुमुक्षु उपस्थित थे। बड़े शहरों के मुकाबले छोटे कहे जानेवाले इस सेन्टर में बहुत बड़ी संख्या में आत्मज्ञान प्राप्त करने मुमुक्षु पधारे, यह एक बहुत आनंद की बात थी। सेवार्थीओं के लिए आयोजित विशेष सत्संग में १५० सेवार्थीओं ने हिस्सा लिया। इस पूरे कार्यक्रम में ४००० से अधिक महात्मा उपस्थित थे।

उपरोक्त सभी सेन्टरों में आप्तपुत्रों द्वारा परीणित भाईयों और अपरीणित युवकों के लिए तथा आप्तपुत्रियों द्वारा परीणित बहनों के लिए अलग-अलग ग्रुप में सत्संग का आयोजन किया गया। हर एक सेन्टर में ज्ञानविधि के पश्चात् आप्तपुत्रों द्वारा फोलोअप सत्संग का आयोजन भी किया गया।

२२-२५ फरवरी : मोरबी त्रिमंदिर के परिसर में आयोजित सत्संग-ज्ञानविधि कार्यक्रम में मोरबी और आसपास के गाँव के लोगों ने बहुत उत्साहपूर्वक भाग लिया और २६०० मुमुक्षुओं ने आत्मज्ञान प्राप्त किया। त्रिमंदिर से नज़दीक जेपुर गाँव के ज़्यादातर लोग एक साल पहले परम पूज्य दादा भगवान के नाम से भी अपरिचित थे, लेकिन उनके गाँव से नज़दीक त्रिमंदिर के निर्माण से उन्हें परम पूज्य दादा भगवान के अक्रम विज्ञान की जानकारी प्राप्त हुई, अत: पूरा गाँव आत्मज्ञान प्राप्त करने के लिए आर्कषित हुआ।

ता. २४ फरवरी २०१३, रविवार के दिन आयोजित मोरबी त्रिमंदिर की प्राणप्रतिष्ठा महोत्सव में लगभग ३० हज़ार मुमुक्षु-महात्माओं ने भाग लिया। सुबह १० से दोपहर १ बजे तक पूज्यश्री ने १-१ घंटे सभी भगवंतों और देवी-देवताओं की प्राणप्रतिष्ठा विधि की। जब पूज्यश्री मंदिर में प्रतिष्ठा विधि कर रहे थे, उस दौरान सभी महात्माओं ने सामूहिक रूप से

चरणविधि की प्रार्थनाएँ तथा असीम जय-जयकार किए। प्रतिष्ठा के बाद पूज्यश्री ने प्रासंगिक उद्‌बोधन करते हुए बताया था कि यहाँ स्थापित सर्व भगवंतों की सुंदर प्रतिष्ठाविधि हुई है और श्री सीमंधर स्वामी भगवान की दिव्य चेतना उतर गई है। पूज्यश्री ने दादा-नीरू माँ को प्राणप्रतिष्ठा करने त्रिमंदिर पधारने का आह्वान करता हुआ पद गाया। उसके बाद तीनों शिखरों पर ध्वजारोहण किया गया। दोपहर ४ से ७ के दौरान उपस्थित हज़ारों महात्माओं की उपस्थिति में पूज्यश्री ने तीर्थंकर भगवंतों का प्रक्षाल-पूजन और अन्य सभी भगवंतों की भी पूजा-अर्चना की, भगवंतो और माताजी की आरतियाँ गाई गई। सभी महात्माओं ने बारी-बारी से इस अलौकिक अवसर का आनंद उठाया। हज़ारों महात्माओं ने यह अद्‌भुत अवसर आनंद-उल्लास के साथ मनाया। रात को त्रिमंदिर में विशेष भक्ति का आयोजन था। दूसरे दिन सुबह त्रिमंदिर के मंगलद्वार पूज्यश्री द्वारा खोला गया। उसके बाद सेवार्थी महात्माओं के साथ विशेष सत्संग का आयोजन हुआ। जिसमें त्रिमंदिर से नज़दीक जेपुर गाँव के लोगों द्वारा दी गई निस्वार्थ सेवा और अन्य महात्माओं की सेवा की चर्चा और सराहना हुई।

२६ फरवरी से १ मार्च : गांधीधाम में आयोजित सत्संग-ज्ञानविधि कार्यक्रम में १९०० मुमुक्षुओं ने आत्मज्ञान प्राप्त किया। सेवार्थियों के लिए आयोजित किए गए विशेष सत्संग में कच्छ जिले के ४०० सेवार्थियों ने भाग लिया। पूरे कार्यक्रम के दौरान ४००० से भी ज़्यादा महात्माओं मौजूद थे। बहुत सारे मुमुक्षुओं ने सत्संग स्थल के दादाई वेबदुनिया स्टॉल में जाकर दादा भगवान वेबसाइट के बारे में जानकारी प्राप्त की और अपने मोबाईल में दादा भगवान एप डाउनलोड करवाया। इस कार्यक्रम के बारे में आसपास के गाँव व शहरों में ३५ जगहों पर प्रोजेक्टर शो का आयोजन किया गया था। ज्ञानविधि के बाद अगले दिन नए ज्ञानप्राप्त महात्माओं के लिए आप्तपुत्रों द्वारा सत्संग किया गया।

२ से ६ मार्च : अपरिणिता युवान बहनों के लिए सेफ्रोनी, महेसाना में पाँच दिन की ब्रह्मचर्य शिविर आयोजित की गई। जिसमें २५० से भी अधिक साधक बहनों ने भाग लिया। शिविर के दौरान पूज्यश्री का सत्संग, ग्रुप डिस्कशन, वीसीडी सत्संग, सामायिक, गरबा वगैरह का आयोजन किया गया।

६ मार्च के दिन अड़ालज में पूज्य दीपकभाई का ४३ वाँ ज्ञानदिन पाँच हज़ार महात्माओं ने उत्साहपूर्वक मनाया। त्रिमंदिर सत्संग होल में आयोजित सत्संग के दौरान पूज्यश्री ने सर्व महात्माओं के सामने मत्था टेककर आशीर्वाद माँगे थे। इन अवसर पर बेबी एम.एच.टी के बच्चों ने सुंदर नृत्य प्रस्तुत किया और उसके बाद में प्रश्नोत्तरी सत्संग हुआ। पूज्यश्री ने महात्माओं के साथ उणोदरी भवन में प्रसाद ग्रहण किया। रात को पूज्यश्री की अखंड तंदुरस्ती, दीर्घायु और जगत् कल्याण हेतु एक घंटे तक कीर्तन भक्ति करने में आई (की गई)।

७ से १० मार्च : अपरिणित युवान भाईओं की सेफ्रोनी, महेसाना में पाँच दिन की ब्रह्मचर्य शिविर आयोजित की गई। जिसमें ३०० से भी अधिक साधक भाईओं ने भाग लिया। शिविर के दौरान पूज्यश्री का सत्संग, ग्रुप डिस्कशन तथा पर्सनल डिस्कशन, वीसीडी सत्संग, सामायिक, गरबा, नाटक, थ्री विज़न विडियो वगैरह का आयोजन किया गया।

१६ से १८ मार्च : अडालज त्रिमंदिर में आयोजित सत्संग-ज्ञानविधि कार्यक्रम के दौरान १८०० मुमुक्षोओं ने आत्मज्ञान प्राप्त किया। पूज्यश्री के सानिध्य में ज्ञानविधि से पहले और बाद में गुजराती, मराठी और हिन्दी भाषाओ में सत्संग हुआ।

आत्मज्ञानी पूज्य नीरू माँ और पूज्य दीपकभाई के आशीर्वाद प्राप्त आप्तपुत्रों के सत्संग कार्यक्रम

पाली **दिनांक :** 26 अप्रैल, **समयः** शाम 4-30 से 7 **संपर्क :** 9461251542
स्थल : मेवाड़ा समाज भवन, रजत विहार कोलोनी, बांगड कोलेज रोड, पाली.

जयपुर **दिनांक :** 27 अप्रैल, **समयः** शाम 4-30 से 7 **संपर्क :** 9799192193
स्थल : मनोरंजन केन्द्र, जी.पी.ओ. केम्पस, एम.आई. रोड. जयपुर.

दिल्ली **दिनांक :** 28 अप्रैल, **समय :** सुबह 11 से 4 **संपर्क :** 9810098564
स्थल : लौरैल हाई-स्कूल, शिवा मार्केट के सामने, अग्रसेन धर्मशाला के पास, पीतमपुरा, दिल्ली.

कानपुर **दिनांक :** 29 अप्रैल, **समय :** शाम 6 से 8-30 **संपर्क :** 9452525981
स्थल : श्री श्री लक्ष्मीनारायण मंदिर, बी.एम. मार्केट, धर्मकाँटा के सामने, परमपूर्वा, कानपुर.

लखनऊ **दिनांक :** 30 अप्रैल, **समयः** शाम 7-30 से 9-30 **संपर्क :** 8090177881
स्थल : राधाकृष्ण मंदिर, चित्रगुप्तनगर, आलमबाग, मानकनगर स्टेशन रोड, लखनऊ.

अडालज त्रिमंदिर में हिन्दी सत्संग शिविर - वर्ष २०१३

सत्संग शिविर : दि. ३० मई से २ जून २०१३, सुबह ९-३० से १२, शाम ४-३० से ७

ज्ञानविधि : दि. २ जून (रविवार), दोपहर ३-३० से ७

तीर्थ यात्रा : दि. ३ जून (सोमवार), सुबह से शाम तक - **शंखेश्वर तीर्थ**

सूचना : यह शिविर गुजराती भाषा नहीं जानने वाले मुमुक्षु-महात्माओं के लिए साल में एक बार हिन्दी में विशेष रूप से आयोजित की जाती है। **इस शिविर के लिए १५ मार्च से १५ मई २०१३ तक रजिस्ट्रेशन होगा।** निम्नलिखित सत्संग केन्द्रों में से अपने नज़दीकी सत्संग केन्द्र पर अपना रजिस्ट्रेशन करवा सकते है और यदि आपके नज़दीक में कोई सत्संग केन्द्र नहीं है, तो अडालज मुख्य सत्संग केन्द्र के रजिस्ट्रेशन विभाग में फोन नं. **079-39830400** पर (सुबह ९-३० से शाम ६) अपना रजिस्ट्रेशन करवा सकते है। रजिस्ट्रेशन कराने के बाद यदि आप किसी कारणवश नहीं आनेवाले हो, तो अपना रजिस्ट्रेशन केन्सल करवाना न भूलें।

यदि आप यात्रा में शामिल होनेवाले हों, तो आपका वापसी टिकट 4 जून का लें।

- अहमदाबाद रेल्वे स्टेशन से अडालज त्रिमंदिर पहुँचने के लिए सिटी बस 89/1 और ओटो रिक्षा, टेक्सी मिलेगी।

औरंगाबाद	: 8308008897	**दिल्ली**	: 9810098564	**मुंबई**	: 9821996663
भोपाल	: 9425676774	**जलंधर**	: 9814063043	**पूणे**	: 9422660497
इन्दौर	: 9893545351	**पाली**	: 9461251542	**हैद्राबाद**	: 9989877786
जबलपुर	: 9425160428	**जयपुर**	: 9785891606	**बंगलूर**	: 9590979099
भिलाई	: 9827481336	**रायपुर**	: 9329644433	**चेन्नई**	: 9380159957
पटना	: 9431015601	**अमरावती**	: 9823127601	**कोलकता**	: 033-32933885

बच्चों-युवकों के लिए हिन्दी शिविर दौरान विशेष संस्कार सिंचन शिविर

दि. 31 मई से 2 जून - वयमर्यादा : 7 से 12 साल - बच्चें, 13 से 16 साल - लड़कें / लड़कियाँ

यह शिविर में शामिल होने के लिए रजिस्ट्रेशन करवाना जरूरी है। जिसमें किड्स केम्प के लिए रु. 50 रजिस्ट्रेशन चार्ज रखा गया है। किड्स केम्प का रजिस्ट्रेशन चार्ज हिन्दी शिविर के समय यहाँ अड़ालज आ कर दे सकते हैं। युथ केम्प नि:शुल्क है। रजिस्ट्रेशन के लिए अपने बच्चों का पूरा नाम, उम्र, फोन नं., सेन्टर का नाम ये सब जानकारी देनी होगी। ये जानकारी आपको register.hindi@dadabhagwan.org ईमेल आईडी पर भेजनी होगी। संपर्क : 079 - 39830939

अडालज में अविवाहित युवकों के लिए हिन्दी में प्रथम बार ब्रह्मचर्य शिविर - दि. ४-५ जून, २०१३

जो युवक इस ब्रह्मचर्य शिविर में भाग लेना चाहते है, उसकी उम्र २१ से ३५ के बीच और आत्मज्ञान लिए कम से कम १ साल हुआ होना जरूरी है। कृपया अधिक जानकारी और रजिस्ट्रेशन के लिए 9723707737 पर संपर्क करें।

आत्मज्ञानी पूज्य दीपकभाई के सांनिध्य में आगामी सत्संग कार्यक्रम

मुंबई

दि. **३-४ मई** (शुक्र-शनि) शाम ६-३० से ९ - **सत्संग** तथा **५ मई** (रवि) शाम ५-३० थी ९ - **ज्ञानविधि**

स्थल : जी.एच. हाई स्कूल, एम.जी. रोड, रेल्वे स्टेशन के पास, बोरीवली (ई) मुंबई **संपर्क :** 9323528901

अहमदाबाद

दि. **१०-११ मई** (शुक्र-शनि), रात ८ से १०-३० - **सत्संग** तथा **१२ मई** (रवि), शाम ५-३० से ९ - **ज्ञानविधि**

स्थल : शहीद ऋषिकेश रामाणी गार्डन, कुंज मोल के पास, न्यु इन्डिया कोलोनी रोड, निकोल .**संपर्क :** 9825076091

अप्रैल २०१३
वर्ष-८, अंक-६
अखंड क्रमांक - ९०

दादावाणी

Date Of Publication On 15th Of Every Month
RNI No. GUJHIN/2005/17258
Reg. No. GAMC - 1500/2012-2014
Valid up to 31-12-2014
LPWP Licence No. CPMG/GJ/15/2012
Valid up to 30-6-2014
Posted at AHD. P.S.O. Sorting Office Set - 1
on 15th of each month.

यह आरती है विरति

जिनके यहाँ 'दादा' की आरती होती है, उनके यहाँ तो वातावरण बहुत उत्कृष्ट होता है। उससे सबमें परिवर्तन आ जाता हैं और मन अच्छा रहता है। बाहर के कुसंग के सामने यह आरती ठंडक देती है और कुचारित्र के विचार को उड़ा देती है। आरती तो बचने का बहुत सुंदर साधन है। उससे खुद तो 'शुद्ध' होता जाता है और बच्चों को, सभी को उंचे संस्कार मिलते हैं। यह आरती अच्छी तरह से बोले तो दादाजी हाजिर हो जाएँ, देवी-देवता हाजिर हो जाएँ और उनकी कृपा बरसती रहें। आरती घर में नियमित बोलें तो बहुत अच्छा है। घर में एक ही क्लेश हो तो सारा वातावरण बिगड़ जाता है, लेकिन यह आरती प्रतिपक्षी कहलाती है। उससे वातावरण सुधर जाता है और शुद्ध-पवित्र हो जाता है। इसीलिए कई लोगों ने घर में ऐसा तय किया है कि 'विधि-आरती-असीम जय जयकार' यह सब हम साथ में बोलेंगे।

\- दादाश्री

Printed and Published by Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation-Owner. Printed at Amba Offset, Basement, Parshvanath Chambers, Usmanpura, Ahmedabad-380014.